केन्द्रीय विद्यालय संगठन
KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN

PM SHRI

PM SHRI KENDRIYA VIDYALAYA GOLAGHAT

"PRATIBHA"

ANNUAL SCHOOL E-MAGAZINE

2025–26

Knowledge • Creativity • Innovation • Excellence











TABLE OF CONTENTS

1. Principal's Message
2. Desk of the editorial board
3. Patrons
4. About the school
5. Staff list
6. Academic Achievements
7. Achievements in Sports
8. Hindi Section
9. Sanskrit Section
10. English Section
11. Assamese Section
12. Art Gallery
13. Photo Gallery
    - The School
    - Inspection
    - Library Activities
    - FLN
    - Eco Club Activities
    - Educational Tour
    - PTMs
    - Vidyanjali
    - Swachchta Pakhwada
    - Sports Activities
    - Hindi Pakhwada
    - NCC activities
    - PM SHRI Activities

तत त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रधानाचार्य के संदेश



प्रिय विद्यार्थियों, शिक्षकगण एवं अभिभावकों,

हर्ष और गर्व का विषय है कि हमारा विद्यालय एक और नए संस्करण के साथ अपनी वार्षिक पत्रिका प्रस्तुत कर रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे विद्यार्थियों की रचनात्मकता और सोच को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम है, बल्कि उनके बौद्धिक एवं नैतिक विकास की भी झलक प्रस्तुत करती है। विद्यालय केवल एक शिक्षण संस्थान नहीं, बल्कि एक संस्कार स्थल भी है, जहाँ हम ज्ञान, चरित्र और कौशल का समुचित विकास करते हैं। इस पत्रिका के माध्यम से छात्रों ने अपनी कल्पनाओं, विचारों और अभिव्यक्तियों को शब्दों और चित्रों के रूप में प्रस्तुत किया है, जो निश्चित रूप से प्रेरणादायक और सराहनीय हैं। मैं इस अवसर पर उन सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों और संपादकीय टीम को बधाई देता हूँ जिन्होंने इस पत्रिका को आकार देने में अपना योगदान दिया। आशा है कि यह पत्रिका आप सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

रवि शंकर खखलारी
प्राचार्य
पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय गोलाघाट

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

सम्पादक की कलम से...

सुविज्ञ पाठकों, हमें अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आपके समक्ष विद्यालय पत्रिका का यह नवीन संस्करण प्रस्तुत कर रहे हैं। यह पत्रिका न केवल हमारे विद्यालय के छात्रों की सृजनात्मकता और प्रतिभा को प्रदर्शित करने का एक मंच है, बल्कि यह उनकी सोच, अभिव्यक्ति और नवाचार की झलक भी प्रदान करती है। इस अंक में आपको छात्र-छात्राओं की लेखनी के विविध रंग देखने को मिलेंगे- कहानियाँ, कविताएँ, लेख, चित्रकला, पहेलियां, चुटकुले, महत्वपूर्ण तथ्य और अन्य रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ, जो उनकी सोच और कल्पनाशीलता को दर्शाती हैं। हमें गर्व है कि हमारे विद्यालय के विद्यार्थी न केवल शैक्षणिक क्षेत्र में बल्कि साहित्य, कला, विज्ञान और अन्य रचनात्मक क्षेत्रों में भी अपनी अद्वितीय छाप छोड़ रहे हैं। हम इस अवसर पर उन सभी शिक्षकों, विद्यार्थियों और सहयोगियों का आभार प्रकट करते है जिन्होंने इस पत्रिका के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान दिया। आशा है कि यह अंक आपको प्रेरित करेगा, आनंदित करेगा और आपकी सोच को नई दिशा देगा। धन्यवाद...

PM Shri KV Golaghat is elated to announce the publication of its annual e-magazine of the session 2025-2026. The Vidyalaya magazine gives its readers a glimpse of the various activities conducted in the Vidyalaya throughout the session. It's also a platform for the budding talents to express their literary skills and artistic talents. The magazine committee thank to all the students who contributed with their creative works to make " PRATIBHA" a reality. Within a very short period of time, Master Ayush Bora, Master Om Ganesh Perkunde, Master Anubhav Khakhalary, Miss Akankhya Bora, Miss Priyashree Nath and Miss Mansi Chetia of class XI, with their technical support helped complete the task in time. God bless to all of them,

Our sincere gratitude to hon'ble Principal Sir for his continuous support and guidance. We hope, readers will accept "AROHAN" with love.

तत त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्रधान संपादक- श्रीमती बनाश्री शर्मा (स्नात्तकोत्तर शिक्षिका - अंग्रेजी)
सहायक संपादक :-
सुश्री नम्रता प्रियं राजकुमारी (प्र. स्ना. शिक्षिका- अंग्रेजी)
श्री चिकमिक म्हणता (प्र. स्ना. शिक्षक संस्कृत)
श्री स्निग्धा बोरा (स्नातकोत्तर शिक्षक)
श्री मधुर्ज्य डोले (स्नात्तकोत्तर शिक्षक- संगणक)

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

PM SHRI

मुख्य संरक्षक



श्री चन्द्रशेखर आज़ाद
उपायुक्त
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

संरक्षक



श्री रामकुमार पाणिग्रही
सहायक आयुक्त
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी



श्री रविशंकर खखलारी
प्राचार्य
पीएम श्री केवी गोलाघाट



श्री नरेश कुमार
सहायक आयुक्त
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

मार्गदर्शक एवं प्रेरणास्रो

About the School

PM SHRI Kendriya Vidyalaya Golaghat is committed to holistic education, innovation, values and excellence in learning.

PM SHRI Kendriya Vidyalaya Golaghat is running in Chelengi, Golaghat(Assam). It is functioning under the leadership of Sh Ravi Shankar Khakhlary Principal and patronage and guidance of Sh. Chandrashekhar Azad, Deputy Commissioner , KVS (RO) Guwahati & Mr. Pulak Mahanta(ACS) & DC, Golaghat.

The deputy Commissioner and the other authorities of the District are keenly interested in the growth of vidyalaya.

PM SHRI KV Golaghat has classes from Balvatika III to 12th. It is a one section school. There are two stream: Science and Arts in the classes of 11th and 12th.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

कर्मचारियों की सूची

1. श्री रविशंकर खाखलारी, प्राचार्य
2. श्रीमती बनाश्री शर्मा, पीजीटी- अंग्रेजी
3. श्री गोलोक सोनोवाल, पीजीटी गणित
4. श्री मनोज कुमार कलम्बे, पीजीटी इतिहास
5. श्रीमती शर्मिष्ठा दत्ता चौधरी, पीजीटी - अर्थशास्त्र
6. श्रीमती सीमा दास, पीजीटी जीव विज्ञान
7. श्री नरेश अरुणराव पेरकुंडे, पीजीटी भूगोल
8. श्री रवीन्द्र सिंह, पीजीटी- रसायन विज्ञान
9. श्री जीतू राजकोंवर, टीजीटी - गणित
10. श्रीमती श्यामली चालिहा, टीजीटी कला
11. श्री प्रवीर नंदी, टीजीटी स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षक
12. सुश्री नम्रता प्रियम राजकुमारी, टीजीटी अंग्रेजी
13. श्री रचित कुमार आजाद, टीजीटी पुस्तकालयाध्यक्ष
14. श्री सिखा ज्योति गोगोई प्राथमिक शिक्षक
15. श्री नेहा वर्मा प्राथमिक शिक्षक
16. सुश्री प्रतिभा घोष, प्राथमिक शिक्षक
17. श्री शुभम राय, प्राथमिक शिक्षक
18. श्री सौरव ज्योति नेओग पोस्ट ग्रेजुएट टीचर (भौतिकी)
19. श्री मधुर्ज्य डोले, पीजीटी - संगणक
20. श्री स्निग्धा बरुआ पीजीटी हिंदी
21. श्रीमती अंकुरिता सैकिया, प्राथमिक शिक्षक
22. श्री मानस प्रतीम पाराशर कंप्यूटर अनुदेशक
23. सुश्री मोम्पी बोरा, बालवाटिका शिक्षिका
24. सुश्री भाग्यश्री देवी, बालवाटिका शिक्षिका

Academic Achievements



Achievements in Sports



हिंदी विभाग
Hindi Section

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

समय का महत्व !

समय का महत्त्व करना हर व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। समय हमारा सबसे कीमती एवं अद्वितीय संसाधक है, जिसे हमें बड़ी सावधानी से बिताना चाहिए। समय को खोने का अर्थ होता है, हमारे पास अनन्त संभावनाएं होती हुई भी हम उनका उपयोग नहीं कर पाते हैं। समय निर्धारित क्रियाओं के लिए महत्वपूर्ण है। जब हम कार्यों को समय पर पूरा कर पाते हैं और संगठित जीवन जीने का आनंद उठा सकते हैं। बिना समय के प्रबंधन के, हम उचित समय पर कार्य नहीं कर पाते हैं, जिससे हमारी जिंदगी में असंतुष्टता का अनुभव होता है।

समय का महत्व व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों जीवन में होता है। व्यक्तिगत स्तर पर, समय को सही तरीके से प्रबंधित करने से हम स्वस्थ, सकारात्मक और सफल होकर जीवन जी सकते हैं। समय पर काम करने से प्रदर्शन और उत्पादकता बढ़ती है और संगठन को सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचने में मदद मिलती है।

समय की महत्ता को समझकर हम अपने जीवन को और अधिक उच्च और उन्नति बना सकते हैं।

-Nowshin Tabassum Class - VII



1... 2... 3

ज्ञान पर निबंध

- ज्ञान व्यक्ति और तथ्य या सूचना के बीच की कड़ी होती हैं।
- बिना बुद्धि के, ज्ञान का आत्मसातीकरण सम्भव नहीं।
- दुनियां में क्या हो रहा हैं, इसके बारे में अपने ज्ञान को विकसित करने में मदद करता हैं।
- चर्चा और परिकल्पना छात्रों के वैचारिक ज्ञान को विकसित करने में भी सहायक हैं।
- ज्ञान ने हमें विज्ञान और प्रौद्योगिकी के सभी क्षेत्र में प्रगति करने में सक्षम बनाया हैं जिसे हम प्राप्त करने मे समर्थ हैं।
- इसने हमें इस पृथ्वी पर कहीं अधिक सक्षम, श्रेष्ठ और परिष्कृत प्राणी बनाया हैं।
- हमारे ~~व्यक्तित्व~~ व्यक्तित्व को आकार देने और लोगों के साथ हमारे व्यवहार और व्यवहार को सही करने के लिए ज्ञान भी बहुत महत्वपूर्ण हैं।
- यह हमें खतरों से बचाने मे मदद करता हैं।
- ज्ञान हमें कठिनाइयों और प्रतिकूलताओं के दौरान संतुलित और मजबूत बनाता हैं।
- मनुष्य के पास परिस्थितियों से न्याय करने की क्षमता हैं।

नाम- काव्यश्री बोरा
कक्षा - IX

Thank You

भारत - एक सांस्कृतिक देश

- भौगोलिक रूप से भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित है।
- भारत एक लोकतांत्रिक देश है जो जनसंख्या के लिहाज से दुसरे स्थान पर है।
- भारत का राष्ट्र गान 'जन गण मन', राष्ट्रीय गीत 'बंदे मातरम' और राष्ट्रीय खेल हॉकी है।
- भारत अपने आध्यात्मिक कार्यों, योगा, मार्शल आर्ट, आदि के लिए बहुत प्रसिद्ध है।
- भारत के लोग स्वभाव से बहुत ही ईमानदार और भरोसेमंद होते हैं।
- विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोग बिना किसी भेदभाव के एक साथ रहते हैं।
- ये एक समृध्द देश है जहाँ साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में महान लोगों ने जन्म लिया है।
- भारत में २८ राज्य और ८ केंद्र शासित प्रदेश है।

नाम - अनुश्री दत्ता

कक्षा - ७वी

शिक्षा

शिक्षा हम सभी के उज्वल भविष्य के लिए आवश्यक अपकरण है। यह स्त्री और पुरुष दोनों के लिए समान रूप से आवश्यक है। जिस प्रकिया द्वारा अध्ययन और अध्यापन होता है, उसे शिक्षा कहते हैं। शिक्षा पाना हर किसी का अधिकार है। यह मनुष्य को पृथ्वी का सबसे चतुर प्राणी बनाती है। शिक्षा से ही रोजगार के अवसरों का सृजन होता है। शिक्षा के माध्यम से ही हम अपने सपने पूरे कर सकते हैं। बिना शिक्षा के हम कुछ भी मुकाम हासिल नहीं कर सकते। आज की पीढ़ी का बिना पढ़े-लिखे भला नहीं हो सकता। शिक्षा ही हमारे ज्ञान का सृजन करती है। शिक्षा समाज में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा मानव जीवन की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है। शिक्षा न हो तो मनुष्य के जीवन की कल्पना भी मुश्किल है। शिक्षा छात्रों को भविष्य के नौकरी के अवसरों के लिए तैयार करके पेशेवर विकास के लिए आधार प्रदान करती है।

नाम:- आकाशनंदिनी फुकन
कक्षा :- VIII
अनुक्रमांक :- 6

पुस्तकालय

पुस्तकालय छात्रों के जीवन का अभिन्न हिस्सा होता है, जो उनके शैक्षिक विकास में अहम भूमिका निभाता है। यहाँ विद्यार्थियों को न केवल पाठ्य पुस्तकों, बल्कि अनेक अतिरिक्त पुस्तकें, शोध पत्रिकाएँ और अन्य अध्ययन सामग्री भी मिलती है। पुस्तकालय में अध्ययन का वातावरण शांत और एकाग्र होता है, जिससे छात्रों को बेहतर तरीके से पढ़ाई करने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, पुस्तकालय विद्यार्थियों को नई जानकारी और विचारों से परिचित कराता है, जो उनके ज्ञान को विस्तारित करने में मदद करते हैं। डिजिटल संसाधनों और इंटरनेट की सुविधा के साथ, पुस्तकालय आज के युग में छात्रों के लिए एक बहुमूल्य संसाधन बन चुका है, बल्कि मानसिक शांति और एकाग्रता भी बढ़ाता है। पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है, जो छात्रों को निरंतर सीखने की प्रेरणा देता है। इस प्रकार, पुस्तकालय छात्रों के लिए एक अद्वितीय शैक्षिक केंद्र है, जो उनके जीवन को सकारात्मक दिशा में मार्गदर्शन करता है।

नाम- प्रांगना दुतश
कक्षा - VII

मानव जीवन में जीवन मूल्यों का महत्व।

जीवन मूल्य व्यक्ति को सकारात्मक बनाते हैं। मानव जीवन के लिए जो भी लाभकारी, शुभ और अच्छे आदर्श हों, उन्हें ही जीवन मूल्य कहा जाता है। जो व्यक्ति मूल्यहीन जीवन जीते हैं, वे समाज में व्यर्थ माने जाते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज के लिए बोझ बन जाते हैं। समाज हो या चाहे परिवार, सब का संचालन कुछ आदर्शों और सिद्धांतों पर निर्भर होता है। जीवन मूल्य सफलता के लिए ज़रूरी है। सिद्धांत और मूल्य जीवन को ऊर्जा प्रदान करते हैं। जीवन उनके आदर्शों और नियमों के द्वारा संचालित होता है। इन्हीं के द्वारा मूल्य चिरकाल तक स्थापित हो जाते हैं। जीवन की सुंदरता का असली महत्व यह है कि वह दूसरों के लिए कितना किया जाता है। लोक कल्याण के लिए जिया जाने वाले जीवन ही सार्थक रहता है। किसी भी इंसान के जीवन में मूल्यों का अहम् योगदान रहता है। करुणा, दया, मानवता, अच्छे आचरण, परोपकार की भावना आदि ऐसे जीवन मूल्य हैं, जो समाज के लिए अति आवश्यक हो जाते हैं। इन में स्वच्छ अनुशासन ही सभी मूल्यों की जननी है। अतः बच्चों में विद्यार्थी जीवन में ही महत्वपूर्ण मूल्यों और संस्कारों की बीज बो दी जानी चाहिए।

नाम- दीपान्दिता उपाध्याय
कक्षा - VII

विद्यार्थी का दायित्व

विद्यार्थी का दायित्व है । गुरुजनों का आज्ञाकारी बनना तथा विद्यालयीय अनुशासन में रहना विद्यार्थी का दायित्व है । धार्मिक संस्कारों को अपने हृदय में विकसित करना विद्यार्थी का दायित्व है । समाज और राष्ट्र के क्रिया-कलापों से अवगत रहना विद्यार्थी का दायित्व है । समाज अथवा राष्ट्र पर कोई विपत्ति या संकट आने पर राष्ट्र-रक्षा के लिए अपने को समर्पित करना विद्यार्थी का दायित्व है ।

'दायित्व' का शाब्दिक अर्थ है जिम्मेदारी । दूसरे शब्दों में किसी कार्य की पूर्ति का भार । दायित्व के निर्वाह से शिक्षा मिलती है बल की प्राप्ति होती है जीवन का विकास होता है । सुमित्रानंदन पंत के शब्दों में, 'जब हम राह भूलकर भटकने लगते हैं, तो दायित्व का ज्ञान हमारा विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक बन जाता है' ।

विद्यार्थी अर्थात विद्या का अभिलाषी । विद्या पाती का इच्छुक । विद्या का पढ़ने वाला विद्यार्थी कहलाता है, इसलिए अपने नाम के अर्थ के अनुरूप उसका सर्वप्रथम दायित्व है विद्या ग्रहण करना । विद्या ग्रहण के लिए चाहिए निरंतर अध्ययन चिंतन और मनन । अध्ययन ज्ञान का द्वार खोलता है मस्तिष्क को परिष्कृत करता है तथा हृदय को सुसंस्कृत बनाता है । बेकन के शब्दों में 'अध्ययन, आनंद, अलंकरण और योग्यता का काम करता है ।' चिंतन तथा मनन अध्ययन की परिपोषिकाएं हैं । इनके द्वारा ही अधीत विषय मानसिक माला में गुंथते हैं ।

प्रत्येक कार्य एक सीमा में ही सुशोभित होता है । 'अति' विनाश की ओर अग्रसर करती है । दैनंदिन पारिवारिक कार्यों में हाथ बंटाकर परिवार की सहायता करना अति है, परंतु विद्यालय के पश्चात संपूर्ण समय परिवार के लिए समर्पण करना अति है । समाज के छोटे-मोटे कार्यों में समय देकर समाज की सेवा करना विद्यार्थी का दायित्व है, क्योंकि वह समाज का एक घटक है, जिसमें वह विकसित हो रहा है, किंतु सामाजिक कार्यों में ही अपने को समर्पित करना 'अति' है । यह 'अति' अध्ययन में व्यवधान डालेगी, मूल दायित्व से उपेक्षित रखेगी । विद्यार्थी विद्या का अर्जन विद्यार्थी का प्रथम और महत्वपूर्ण कर्तव्य है । अध्ययन, मनन और चिंतन इस दायित्व पूर्ति की सीढ़ियां हैं । मन की एकाग्रता, एकांतता और एकनिष्ठता लक्ष्य पूर्ति के साधन हैं ।

Name - Prangona Powerah

एकाग्रता कैसे बढ़ाए ?

आज के व्यस्त जीवन में एकाग्रता बनाए रखना एक चुनौती है। एकाग्रता बढ़ाने के लिए सबसे पहले अपने लक्ष्य को स्पष्ट करना जरूरी है। जब हमें यह पता होता है कि हमें क्या हासिल करना है, तो ध्यान केंद्रित करना आसान हो जाता है। दिनचर्या में योग और ध्यान को शामिल करना एकाग्रता को बढ़ाने में सहायक है, क्योंकि यह मन को शांति और स्थिरता प्रदान करता है।

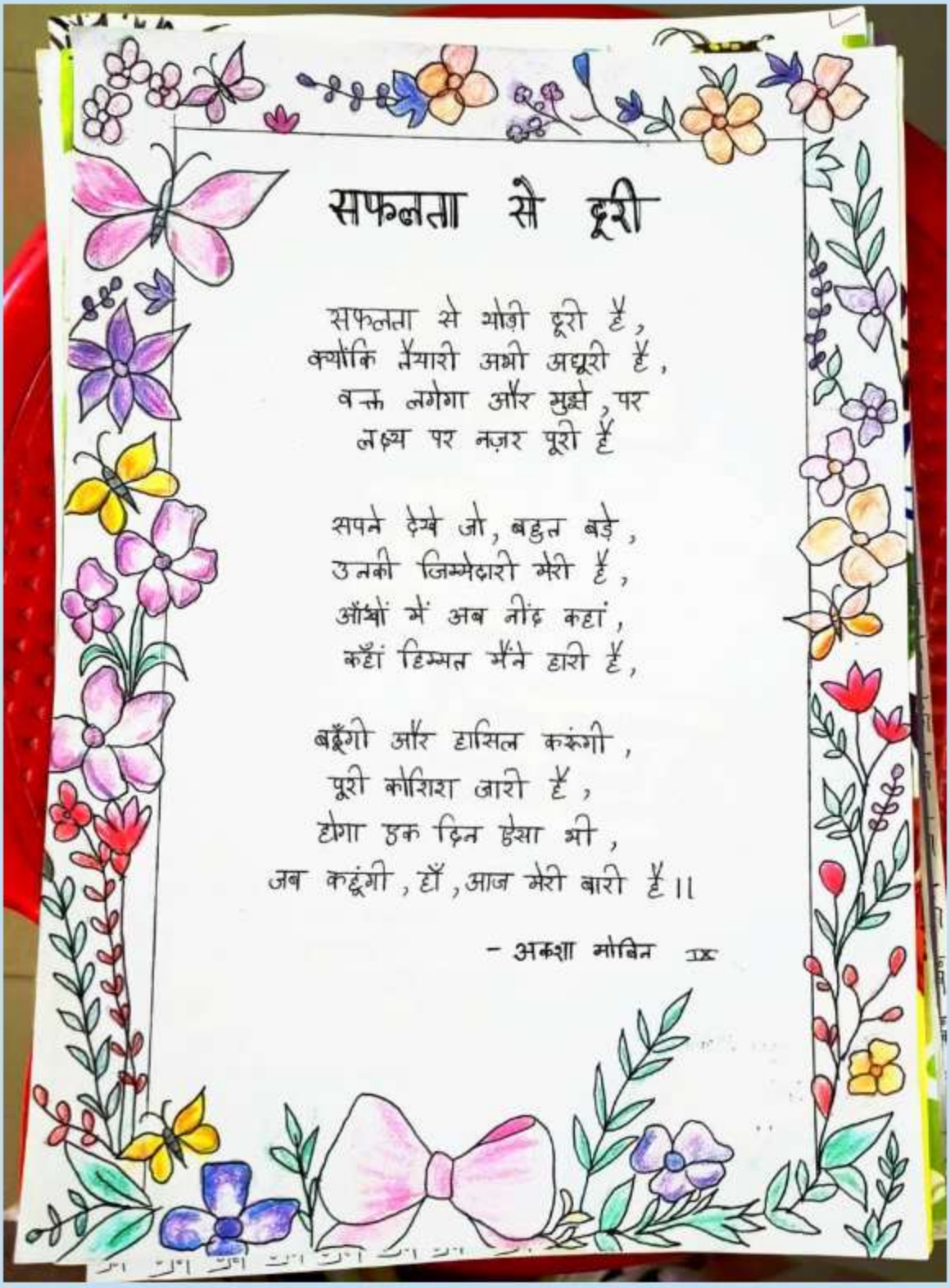
इसके साथ ही, काम के दौरान मोबाइल फोन या अन्य ध्यान भटकाने वाले उपकरणों से दूरी बनाए रखें। समय का प्रबंधन भी एकाग्रता में सहायक है, कार्य को छोटे-छोटे हिस्सों में बाँटें और एक समय में एक ही कार्य पर ध्यान दें। नियमित रूप से ब्रेक लेना भी जरूरी है ताकि दिमाग तरोताजा रहे। इन उपायों को अपनाकर हम अपनी एकाग्रता को बेहतर बना सकते हैं और लक्ष्य प्राप्ति की ओर प्रभावी ढंग से बढ़ सकते हैं।

नाम - सायेस्था बोरा कक्षा - VIII

श्रीविष्णु - महिमा

तैंतीस करोड़ देवी - देवताओं में
ब्रह्मा, विष्णु और महेश (शिव) को
सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। इनमें भी
विष्णु भगवान् को ईश्वर का प्रतिरूप
माना जाता है। विष्णु भगवान् को
ही सृष्टि का उत्पन्नकर्ता, पालक
और संहारक कहा गया है।
विष्णु - पुराण में वर्णित है कि इस
ब्रह्माण्ड के अस्तित्व में आने से
पूर्व भी एक दिव्य - शक्ति का अस्तित्व
था। हिन्दु - धर्म में इस दिव्यशक्ति
को परब्रह्म परमात्मा कहा गया है। उस
समय एक महासून्य था और उस सून्य में
परमात्मा नामक वह दिव्य - शक्ति स्थित थी। उस
परमात्मा ने स्वयं को निराकार से साकार रूप
देने के लिए ~~स्वयं~~ स्वयं से साकार होकर विष्णु
के रूप में आकार ग्रहण किया और ब्रह्माण्ड
की रचना आरम्भ की।

- प्रतिज्ञा दास VIII



सफलता से दूरी

सफलता से थोड़ी दूरी है,
क्योंकि तैयारी अभी अधूरी है,
वक्त लगेगा और मुझे, पर
लक्ष्य पर नज़र पूरी है

सपने देखे जो, बहुत बड़े,
उनकी जिम्मेदारी मेरी है,
आँखों में अब नींद कहां,
कहाँ हिम्मत मैंने हारी है,

बढ़ूँगी और हासिल करूंगी,
पूरी कोशिश जारी है,
होगा इक दिन ऐसा भी,
जब कहूंगी, हाँ, आज मेरी बारी है।।

- अकशा मोबिन IX

पुष्प की अभिलाषा

चाह नहीं मैं सुरबाला के,
गहनों में गूँथा जाऊँ,

चाह नहीं प्रेमी - माला में,
बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव,
पर, हे हरी, डाला जाऊँ
चाह नहीं, देवों के शिर पर,
चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ।
मुझे तोड़ लेना वनमाली!
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।

- Sudarshana Gogoi Class-IX

सपनों की उड़ान

आसमान में उड़ते पंछी कहते,
उड़ को दिल से तुम छूते।
छोटे-छोटे कदम बढ़ाओ,
अपने सपनों को सच
बनाओ।

रात अंधेरी चाहे कितनी,
सुबह की किरणें आती हैं,
हिम्मत रखो, विश्वास जगाओ,
मंजिल खुद पास बुलाती है।

मुश्किल राहें रोकेंगी तुमको,
पर तुम रुकना मत कभी।
मेहनत की रोशनी से ही,
चमकेगी किस्मत सभी।

चलो बढ़ें अब आगे मिलकर,
नया सवेरा लाना है।
सपनों की इस प्यारी दुनिया
को,
हकीकत में सजाना है।

नाम - काव्यश्री बोरा
कक्षा - X



रे चटक रे चटक



रे चटक रे चटक
कियत् मधुरं कुजसि ।
वृक्षोपरि उपविश्य
मधुरं गीतं गायसि ॥

पश्य कमलं पातलम्
सरसि विकसति मन्दं मन्दम् ।
उपरि भ्रमरः गुञ्जति
मधुरं रसं च पिबति ॥

पश्य रे बालं सुन्दरं
मुखं तस्य प्रफुल्लितम् ।
दृष्ट्वा च त्वां
शनैः शनैः सः नृत्यति

-अनुकृपा दत्ता VIII

परिश्रम का रंग

मेहनत के रंग से जीवन सँवारो,
हर कठिनाई से मत तुम हारो।
सपनों को अपने सच तुम करो,
हौंसलों की रोशनी से सँवारो।

रात अंधेरी कितनी भी आए,
सुरज फिर से चमक ही जाए।
संघर्ष ही है सफलता की चाबी,
हर कदम पर यह सिखाए।

सच्चाई की राह पर चलना,
ईमानदारी को मत बदलना।
जो मेहनत से आगे बढ़ते हैं,
संसार उन्हीं को है सलाम करता।

NAME - BHUMI CHAUHAN
CLASS - VIII B
ROLL NO. - 18

सृजन ही तुम्हारा धर्म है

कार्यकर्ता, तुम बाहर आओ
परतंत्रता की जंजीरे खोलना
मुक्त मन से मुक्त आकाश को देखो

आप थकेंगे नहीं
सृजन ही तुम्हारा धर्म है
अतीत को देखो
आप देखेंगे की यह वहाँ भी है
मजदूरों का खून

अमूल्य श्रम आपका बलिदान है
यह आज भी दुनिया में चमकता है
यह आपके परिश्रम का प्रतीक है

आप पर शोषणकारी शासन
तुम्हें हत्या करनी होगी
स्वार्थी आत्म - चेतना
तुम्हें इसे वापस लाना होगा

मन में अनंत शक्ति है
आप जिस चीज़ के इकट्ठा हैं
उसे दोनों हाथों से पकड़ लेंगे।

नाम :- आकांक्षा बोरा
कक्षा :- 04

शिक्षक

जीवन में जो राह दिखाएँ,
सही तरह चलना सिखाएँ।
माता - पिता से पहली आता,
जीवन में सदा आदर पाता।

सबका मान प्रतिष्ठा जिससे,
सीखी कर्तव्यनिष्ठा जिससे।
कभी बड़ा न दूर में जिससे,
वह मेरा पथदर्शक है जो।
मेरे मन को भाँता,
वह मेरा शिक्षक कहलाता।

कभी है शांत, कभी है धीर,
स्वभाव में सदा गंभीर,
मन में छोड़े यह इच्छा,
काश मैं उस जैसा बन पाता,
जो मेरा शिक्षक कहलाता।

नाम - गायत्री साहू
कक्षा - XI
अनुक्रमांक - 25

TOPIC

DATE

वसंत की आहट

ऋतु वसंत की आहट आई,
कोपल फूटे नई डाली की,
कलियों में अकुलाहट आई,
फूलों ने ली अंगड़ाई,
झूम झूम भंवरा मंडराये,
ऋतु वसंत की बेला आई।
शीशम आम कनेर खिले,
लिपटा अंग-अंग मंजर लिए,
लहराई गेहूं की बाली
सरसों खेत हुए पीले,
धरती ने शृंगार चढ़ाई
धरा ने ओढ़ी मखमली चादर
ठिठुरन वाली चादर उतर,
गर्माहट ने ली अंगड़ाई,
कोयल मोर पपीहा गाये,
चिड़ियों संग बगिया चहके,
पीहू पीहू पपीहा प्रेम सिखाए,
मधुर सुगंध ले पूरवा आई,
ऋतु वसंत की आहट आई।

..... अर्चना

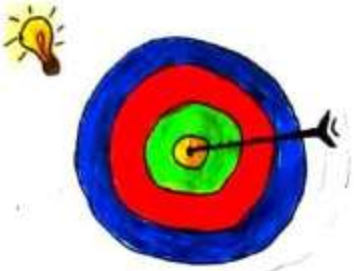
- Angel Sonowal VII

Oddy Stationery

आत्मविश्वास

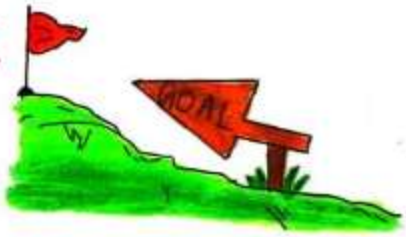
ये आसमां छीन गया तो क्या?
नया ढूंढ लेंगे,
हम वो परिंदे नहीं जो
उड़ना छोड़ देंगे !!





मत पूछ हौंसले हमारे,
आज कितने विश्रब्ध हैं,
एक नई शुरुआत, नया
आरंभ तय है....
माना अभी हम निःशब्द हैं!

मंजिले दूर हैं तो क्या हुआ,
रास्ते हम खुद बनाएंगे,
जिद है अपनी जीत की,
हार को भी हरा के दिखाएंगे।





चोट खाकर भी मुस्कुराएंगे हम
गिरकर फिर से उठ खड़े होंगे,
सूरज की तरह चमकने को,
अंधेरों से भी लड़ जाएंगे!

Class→7 Name→Bristi bannya Bora

संस्कृत अनुच्छेद

Sanskrit Section

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

तुलसीदास

गोस्वामी तुलसीदास (१५३२-१६२६) महान् कविः, साधु भक्तः च आसीत्। सः हिन्दीसाहित्यस्य महान् निर्मातृषु अन्यतमः अस्ति। अद्यत्वे अपि तस्य कृतयः लोकप्रियाः सन्ति। तुलसीदासस्य जन्म उत्तरप्रदेशस्य कासगञ्जमण्डलस्य राजापुरग्रामे अभवत्। तुलसीदेवी तस्य माता नाम आसीत्, तस्य पिता नाम आत्माराम दुबे आसीत्। तुलसीदासस्य बाल्यकालः अनेकेषु कष्टेषु व्यतीतः। यदा सः २२ वर्षीयः आसीत् तदा तस्य माता मृता। तदनन्तरं तस्य पिता तं विधवागृहे अत्यजत्।

तुलसीदासः काशीनगरे शिक्षणं समाप्य महान् विद्वान् अभवत्। तुलसीदासः अनेकानि ग्रन्थानि लिखितवान्, येषु "रामचरितमानस" इति प्रसिद्धः। रामचरितमानसः महाकाव्यः यस्मिन् भगवतः रामस्य जीवनं कर्म च वर्णितम् अस्ति। रामचरितमानसः हिन्दीसाहित्यस्य समीक्षितमः ग्रन्थः इति मन्यते। एतदतिरिक्तं तुलसीदासः "कवितावली", "दोहावली", "विनयपत्रिका", "गीतावली" इत्यादीनि अन्यानि बहवः ग्रन्थाः अपि लिखितवन्तः।

तुलसीदासः महान् भक्तः आसीत्, सम्पूर्णं जीवनं भगवतः रामस्य भक्तिं प्रति समर्पितवान्। सः महान् साधुः अपि आसीत् सः स्वज्ञानेन, आध्यात्मिकतायां च जनानां महतीं लाभं कृतवान्। तुलसीदासस्य जीवनं कार्याणि च अद्यत्वे अपि जनान् प्रेरयन्ति।

तुलसीदासस्य कञ्चन प्रसिद्धा: ग्रन्था: यथा ।

- रामचरितमानस
- कवितावली
- दोहावली
- विनय पत्रिका
- गीतावलीरामलला नहछू
- जानकी मंगल
- पार्वती मंगल

तुलसीदासस्य रचना: अतीव सुन्दरा: आत्मनिष्ठा: च सन्ति। स: जनेभ्य: प्रेम, करुणा, दया, भक्तिं; इति सन्देशं ददाति। तुलसीदास: महान् कवि:, साधु:, भक्त: च आसीत्। स: हिन्दीसाहित्यं भारतीयसंस्कृतिं च समृद्धवान्।

धन्यवाद

नाम - निकिता गिरिंग फुकन
रोल नं - 31
कक्षा - XI

महाकवि कालिदास पर निबंध

महाकविः कालिदासः एक महान कवि आसित।
सः संस्कृतभाषायाः श्रेष्ठतमः कविः आसित।
यादृशः रसप्रवाहः कालिदासस्य काव्येषु विद्यते
तादृशः अन्यत्र नास्ति। सः कविकुलशिरोमणिः
आसित। कालिदासेन त्रीणिनाटकानि, (मालविका-
ग्निमित्रम्, विक्रमोर्वशीयम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम् च)
द्वे महाकाव्ये (रघुवंशम् कुमारसम्भवं च)
द्वे गीतिकाव्ये (मेघदूतम् ऋतुसंहारम् च)
च रचितानि।

कालिदासस्य लोकप्रियतायाः कारणं तस्य
प्रसादगुणयुक्ता ललिता शैली आसि, कालिदासस्य
प्रकृतिचित्रणं अतीवरम्यम् आसित चरित्रचित्रणे
कालिदासः अतीव पटुः आसित।

यत् दण्डैर्दण्डं डडैर्डण्डैर्डम् इत्यादयः बहवः श्लोकाः सन्तीति, कालिदासविषयं मम जिज्ञासां दृष्ट्वा गुरुः द्वित्रपुस्तकानि मह्यं दत्तवान्। तदहं शीघ्रमेव पठित्वा प्रत्यर्पितवान् च। तदानीं गुरुः उक्तवान् यत् अन्यः कालिदासमधिकृत्य किं वदति इत्यपेक्षया स्वयं कालिदासं चेदेव उत्तमम् इति। ततः आरभ्य गुरोः साहाय्येन कालिदासकृतिः पठितुम् आरब्धवान्।।

भिन्नभिन्नपुस्तकपठनतः अहं ज्ञातवान् यत् कालिदासस्य कालं जन्मस्थानं किमधिकम् कृतिः च अधिकृत्य पण्डितानां समानाभिप्रायः नास्तीति। तथापि कालिदासः जनिं न प्राप्तवान् इति पठित्वा मम दृढमभासत कालिदासः जानिं न प्राप्तवान् इति इतिहासकारः वदन्ति चेदपि तस्य अस्तित्वं न नश्यति यावत् एकः श्लोकः जीवति, अतः एव कालिदासस्य देशकालादिविषये चर्चाकरणसमये द्वित्रान् वा श्लोकान् पठति चेत् वरम्।

नाम :- आकांक्षा बोरा
कक्षा :- 7

एकता

विविधतायां एकता: एक: अवधारण अस्ति या येषु व्यक्तिषु एकता सूचयति येषां मध्ये केचन भेदा: सन्ति। एते भेदा: संस्कृति:, भाषा, विचारधारा, धर्म:, सम्प्रदाय:, वर्ण:, जातीयता इत्यादीनां आधारेण भवितुम् अर्हन्ति अपि च अस्या: अवधारणाया: अस्तित्वम् अनादिकालात् एव अस्ति। एत: परं विविधै: राजनैतिक-सामाजिकसंस्थाभि: विभिन्नै: व्यक्तिभि: समुदायै: वा एकतायां: प्रतिकूलेषु अस्य उपयोग: क्रियते। अनेकसंस्कृतीनां, धर्मीकाणां विभूतिनां, सामाजिकपक्षधरीनां च जनानां शान्तिप्रेमयो: सच्चरित्रं विविधतायां एकतायां: प्रमुख दृष्टान्तम् अस्ति। पृथिव्यां प्राय सर्वत्र जना: एतत् प्रशंसनीयं व्यवहारं निम्नं दृष्टिवन्त:। अवधारण: परिणाम: अवश्यमेव मानवतायां: नैतिकनैतिकविकासं: अभवत्। विविधतायां एकता इति वाक्यं सामञ्जस्यं शान्तिं न निर्दिशति। सर्वेषां एकरूपता भवतु इति विविधासमूहेषु अस्य प्रयोग: भवति:। जाति:, पंथ:, जाति:, शक्तियता च भवेऽपि नानात्वेन उदाहरणानि सन्ति। भौतिक-सांस्कृतिक-भाषिक-राजनैतिक-भेदा: अपि विविधतायां एकतायां समाविष्टा: सन्ति। सर्वान् मनुष्यान् जीवान् च एकीकृत्य भेदानाम् अभावेऽपि परस्परं बन्धनस्य पद्धतीं अन्वेषयितुं शिक्षयति।

नाम- विदिशा दास
कक्षा- VIII
रोल -21

अध: प्रदत्तेषु महापुरुषेषु एकस्य लघुजीवनवृत्तं लिखन्तु।

स्वामी विवेकानन्द:

आधुनिक भारतस्य निर्माण कर्तृषु युगपुरुषस्य विवेकानन्दस्य नाम सर्वोपरि अस्ति। तस्य जन्म बंग प्रान्ते 1863 तमे वर्षे अभवत्। तस्य बाल्यनाम 'नरेन्द्र: 'आसीत्। तस्य पिता विश्वनाथ दत्त: वाककील: आसीत्। तस्य मातु: नाम भुवनेश्वरी देवी आसीत्। नरेन्द्र: अत्यन्तं विलक्षण: विद्यानुरागी, आध्यात्मिक: संन्यासीप्रिय: चासीत्। श्रीरामकृष्णस्य भक्तिमार्गेण आध्यात्मिकमार्गेण च प्रभावितो भूत्वा नरेन्द्र: तस्य शिष्यत्वं गहीतवान्। रामकृष्णेन एव तस्य नाम विवेकानन्द: इति कृतम्।

विवेकानन्द: अमेरीकादेशे शिकागोनगरे विश्वधर्म सम्मेलने हिन्दुधर्मस्य प्रतिनिधित्वं अकरोत्। अयं महापुरुष: लोकसेवार्थं रामकृष्णमिशनस्य इत्यस्य स्थापनाम् अकरोत् सम्पूर्णे जीवनें च दीनहीनाना, रुग्णानां, पीडितानां मनसा वाचा कर्मणा सेवां कृतवान्।

युगपुरुष: विवेकानन्द: 1902 तमे वर्षे जुलाईमासस्य 4 दिनांके पञ्चतत्वं गत:।

Name - Bishnupriya Bora
Roll no - 6
Class - X

अध: प्रदत्तेषु महापुरुषेषु एकस्य लघुजीवनवृत्तं लिखन्तु।

स्वामी विवेकानन्द:

आधुनिक भारतस्य निर्माण कर्तृषु युगपुरुषस्य विवेकानन्दस्य नाम सर्वोपरि अस्ति। तस्य जन्म बंग प्रान्ते 1863 तमे वर्षे अभवत्। तस्य बाल्यनाम 'नरेन्द्र: 'आसीत्। तस्य पिता विश्वनाथ दत्त: वाककील: आसीत्। तस्य मातु: नाम भुवनेश्वरी देवी आसीत्। नरेन्द्र: अत्यन्तं विलक्षण: विद्यानुरागी, आध्यात्मिक: संन्यासीप्रिय: चासीत्। श्रीरामकृष्णस्य भक्तिमार्गेण आध्यात्मिकमार्गेण च प्रभावितो भूत्वा नरेन्द्र: तस्य शिष्यत्वं गहीतवान्। रामकृष्णेन एव तस्य नाम विवेकानन्द: इति कृतम्।

विवेकानन्द: अमेरीकादेशे शिकागोनगरे विश्वधर्म सम्मेलने हिन्दुधर्मस्य प्रतिनिधित्वं अकरोत्। अयं महापुरुष: लोकसेवार्थं रामकृष्णमिशनस्य इत्यस्य स्थापनाम् अकरोत् सम्पूर्णे जीवनें च दीनहीनाना, रुग्णानां, पीडितानां मनसा वाचा कर्मणा सेवां कृतवान्।

युगपुरुष: विवेकानन्द: 1902 तमे वर्षे जुलाईमासस्य 4 दिनांके पञ्चतत्वं गत:।

Name - Bishnupriya Bora
Roll no - 6
Class - X

समयः

समयस्य समुचितं रूपं उपयोगः एव समयस्य सदुपयोगः कथ्यते । समयस्य सदुपयोगः मानव समाजस्य हित साधकेषु साधनेषु साधनं वर्तते । संसारे बहूनि वस्तूनि बहुमूल्यानि सन्ति परं तेषु सर्वापेक्षया बहुमूल्य वस्तु समयः एव वर्तते । यतः अन्यानि वस्तूनि विनष्टानि अपि पुनः लब्धुं शक्यन्ते परन्तु व्यतीतः समयः केनापि उपायेन पुनः लब्धुं न शक्यते । विद्या विनष्टा पुनः अभ्यासेन लब्धुं शक्यते, धनं विनष्टं पुनः उपार्जनेन लब्धुं शक्यते, धनं विनष्टं पुनः सत्कर्मणा उपार्जयितुं शक्यते परं विनष्टः समयः सहस्रैः अपि प्रयत्नैः दुर्लभः एव । अतएव समयः सर्वाधिकं बहुमूल्यं वस्तु मन्यते ।

अस्माकं भारतीयानां कृते अयं राष्ट्रनिर्माणस्य कालः वर्तते । अस्माकं स्कन्धेषु राष्ट्रनिर्माणस्य महान् भारः वर्तते, अस्मिन् समये तु विशेषरूपेण अस्माभिः समयस्य सदुपयोगे ध्यानं दातव्यं येन शीघ्रतया राष्ट्रस्य समुन्नतिः स्यात् । अस्मिन् विषये छात्रैः विशेषरूपेण ध्यानं देयम् । यतः ते एव भारतस्य भावीनः कर्णधाराः तथा भाग्यविधातारः सन्ति



नाम- प्रांगना दुबरा
कक्षा- VII

पर्यावरणम्

वयं वायुजलमृदाभिः आवृत्तं वातावरणं निवसामः । एतदेव वातावरणं पर्यावरण कथ्यते । पर्यावरणमेव वयं जीवनोपयोगिवस्तुनि प्राप्नुमः । जलं वायुः च जीवने महत्वपूर्णौ स्तः । सामप्रतं शुद्ध - प्रेय-जलस्य समस्य वर्तते । अधुना वायुरपि शुद्धं नास्ति । एवमेव प्रदूषित - पर्यावरणेन विविधाः रोगाः जायन्ते । पर्यावरणस्य रक्षायाः अति आवश्यकता वर्तते । प्रदूषणस्य अनेकानि कारणानि सन्ति । औद्योगिकापशिष्ट - पदार्थ - उच्च - ध्वनि - यानधूमादयः प्रमुखानि कारणानि सन्ति । पर्यावरणरक्षार्थं वृक्षाः रोपणीयाः । वयं नदीषु तडागेषु च दूषितं जलं न पतेम् । तैल रहित वाहनानां प्रयोगः करणीयः । जनाः तरुणां रोपणम् अभिरक्षणं च कुर्युः ।

अस्मान् परितः यानि पञ्चमहाभूतानि सन्ति तेषां समवायः एव परितः यानि पर्यावरणम् इति पदेन व्यवहीयते । इत्युक्ते मनुष्यः यत्र निवसति, यत् खादति, यत् वस्त्रं धारयति, यज्जलं पिबति यस्य पवनस्य सेवनं करोति, तत्सर्वं पर्यावरणम् इति शब्देनाभिधीयते । अधुना पर्यावरणस्य समस्य न केवलं भारतस्य अपितु समस्तविश्वस्य समस्य न केवलं भारतस्य वर्तते । यज्जलं यश्च वायुः अद्य उपलभ्यते तत्सर्वं मलिनं दूषितं च दृश्यते अथवा भारतस्य राजधानी अस्ति । पर्यावरणम् पश्यतु । भारतस्य राज्येषु अन्यतमम् अस्ति । पर्यावरणम् भारतदेशस्य राजधानी विश्वस्य अतिविशालासु नगरीषु अन्यतमा इति गण्यते । पर्यावरणम् एषा भारतस्य तृतीया बृहती नगरी वर्तते ।



Name - Brangma Doswrah
Class - VIII
Roll no. - 38

अटपटे सवाल .... चटपटे जवाब

राजा कृष्णदेवराय तेनालीराम से प्रायः अटपटे सवाल पूछा करते थे और तेनालीराम भी उन्हें उनके अटपटे सवालों के चटपटे जवाब दिया करता था।

एक बार महाराज ने तेनालीराम से पूछा, "तेनाली! बताओ, हमारे राज्य में कितने कबूतर हैं?"

तेनालीराम बोला, "महाराज! थोड़ा वक्त चाहिए। जवाब मैं पन्द्रहों तक दे दूंगा।"

तीसरे दिन तेनालीराम दरबार में उपस्थित हुआ और राजा से बोला, "महाराज! हमारे राज्य में नौ सौ निन्यानवे कबूतर हैं।"

"क्या तुमने सही गिनती की है?" राजा कृष्णदेवराय ने तेनालीराम से पूछा।

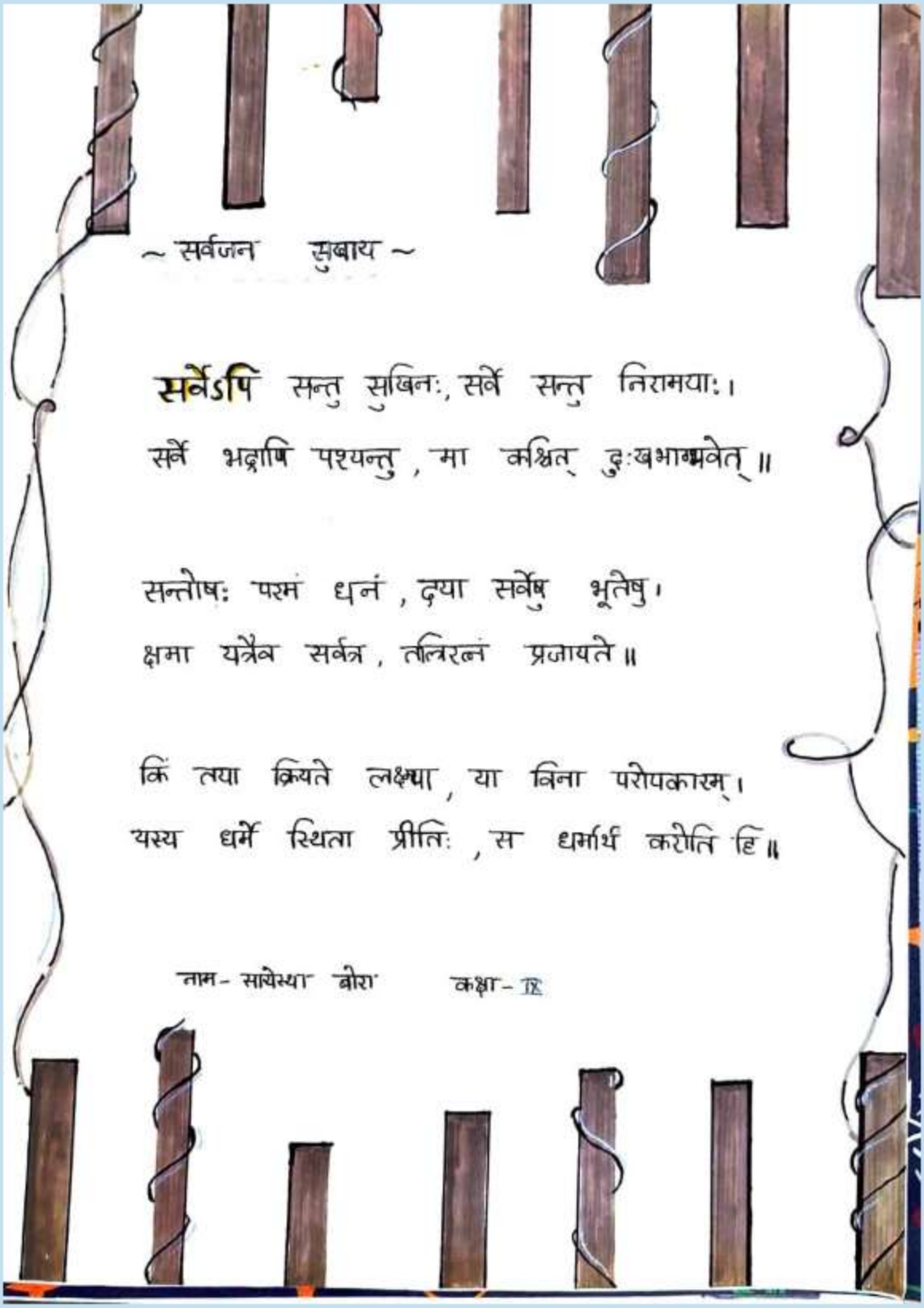
तेनालीराम बोला, "महाराज, यकीन न हो तो इतने दरबारियों में से किसी को भी भेजकर गिनती करवा लें। संभव है कि जब दरबारी गिने तब यह संख्या कम या अधिक हो जाए।"

"ऐसा क्यों?" महाराज ने पूछा।

"यदि कबूतर कम हों तो समझना कि कुछ कबूतर अपने रिश्तेदारों से मिलने चले गए होंगे। इसके विपरीत संख्या अधिक हो तो समझना कि कुछ कबूतर अपने रिश्तेदारों से मिलने आ गए हैं।"

"वैसे गणना तो मैंने अच्छी तरह की है। उसके मुताबिक इतने ही कबूतर हमारे राज्य में हैं।" तेनालीराम का जवाब दुरुस्त था।

नाम : शिखिता दास
कक्षा : (४)



~ सर्वजन सुखाय ~

सर्वेऽपि सन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्॥

सन्तोषः परमं धनं, दया सर्वेषु भूतेषु।
क्षमा यत्रैव सर्वत्र, तत्रिरत्नं प्रजायते॥

किं तया क्रियते लक्ष्म्या, या विना परोपकारम्।
यस्य धर्मे स्थिता प्रीतिः, स धर्मार्थं करोति हि॥

नाम- सायेस्था बोरा कक्षा- IX

कलानां महत्वम्

कलायाः परिभाषा विस्तीर्णा अस्ति, यद्यपि कार्यम् अनुशासनेन सौन्दर्येण च कर्तुं शक्यते, सा कला।

मनुष्यसंस्कृतौ सहस्रेषु वर्षेषु नैकाः कलाः उद्भूताः, भारतीयसंस्कृतौ भाषितानां कलानां संख्या चतुष्षष्टिः, एतासु गायनं, नृत्यं, चित्रकला च अधुनिककालस्य प्रमुखकलाः, सर्वाः अपि कलाः आदरणीयाः, यतः ताः मनुष्यजीवने सौन्दर्यं वर्धयन्ति,

यदि कोऽपि कलायां शिक्षां गृह्णाति, तर्हि तस्मै पूर्णजीवनाय सत्रिः प्राप्यते, तस्मादपि अधिकं मनुष्यात्मनः उद्धारः भवति, अस्य कारणं यत्, कला सर्वत्र सुखं प्रसारयति, केचन जनाः, येभ्यः कला अतीव प्रिया अस्ति, ते तस्याम् निपुणतां प्राप्य तामेव जीवनकार्यरूपेण स्वीकुर्वन्ति,

सामान्यजनेभ्यः कला मनोरञ्जनस्य साधनम् अस्ति, कलायां विशारदेभ्यः कला दैवस्य पूजातुल्या, परन्तु सर्वेभ्यः जनेभ्यः कला चिन्तायाः निवारणस्य साधनम्, चिकित्सया इदं संशोधितं, यत् कलया नीरसता निर्गच्छति, कला सृजनशीलताम् अपि वर्धयति, अतः जीवनस्य उद्देश्यम् मनुष्यजीवने कलाः भवेयुः, सत्यमेव उक्तम् -

साहित्यसङ्गीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः
पुच्छविषाणहीनः,

तृणं न खादन्नपि जीवमानः तद्भागधेयं
परमं पशूनाम्,,

नाम:- अमृता प्रियदर्शिनी चुरिया कक्षा:-०९

Topic : ..... Date : ...../...../..... Page No. .....

भारते विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

भारतीयविज्ञानपरम्परा विश्वस्य प्राचीनतमानां वैज्ञानिकपरम्परासु अन्यतमः अस्ति, खीष्टात् ३००० वर्षपूर्वं भारते विज्ञानस्य उत्पत्तिः अभवत्। हड़प्पा - मोहेनजोदरो - उत्खननात् प्राप्ताः सिन्धु - उपत्यकायाः प्रमाणानि तत्रत्यानां जनानां वैज्ञानिकदृष्टिकोणं वैज्ञानिकसाधनानाम् उपयोगः च प्रकाशयति। प्राचीनकाले चिकित्साविज्ञानक्षेत्रे चरकस्य सुश्रुतस्य च, खगोलशास्त्रस्य ~~गणितस्य~~ गणितस्य च क्षेत्रे आर्यभटस्य, ब्रह्मगुप्तस्य, आर्यभटस्य च द्वितीयस्य, ~~रसा~~ रसायनशास्त्रस्य च नागार्जुनस्य च आविष्काराः अतीव महत्त्वपूर्णं योगदानं दत्तवन्तः। अद्यापि तस्य अविष्काराः कोनचित् रूपेण वा अन्येन वा प्रयुक्ताः सन्ति।

अद्य विज्ञानस्य रूपस्य बहु विकासः अभवत्। ~~सम्~~ सम्पूर्णे विश्वे वैज्ञानिकाविष्काराः तीव्रगत्या क्रियन्ते। एतेषां आधुनिकवैज्ञानिक - आविष्कारानाम् दौड़ - मध्ये भारतस्य जगदीशचन्द्र - बोस, सी. वी. रमन, सत्येन्द्रनाथ बोस, मेघनाद साहा, प्रशांतचन्द्र महालानोबिस, श्रीनिवास रामानुजन, हरगोबिन्द खुराणा, इत्यादयः वनस्पतिशास्त्रस्य, भौतिकशास्त्रस्य, गणितस्त, ~~रसा~~ रसायनशास्त्रस्य, यान्त्रिकस्य प्रयोगं कृतवन्तः चिकित्सा विज्ञानम् इत्यादिषु खगोलशास्त्रादिक्षेत्रेषु महत्वपूर्ण योगदानम् अस्ति

ESCAPEA

महत्त्वपूर्णं योगदानमू अस्ति ।

नाम - उर्वी प्रितम बरुआ
कक्षा - IX.
क्रमांक - 52

सदाचार :

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु:।
नास्त्युद्यमसमो बन्धु: कृत्वा यं नावसीदति ॥1॥

श्व: कार्यमद्य कुर्वीत पूर्वाह्णे चापराह्णिकम् ।
नहि प्रतीक्षते मृत्यु: कृतमस्य न वा कृतम् ॥2॥

सत्यं ब्रूयात् प्रियं ब्रूयात् न ब्रूयात् सत्यमप्रियम्।
प्रियं च नानृतं ब्रूयात् एष धर्म: सनातन: ॥3॥

सर्वदा व्यवहारे स्यात् औदार्यं सत्यता तथा।
ऋजुता मृदुता चापि पितरं तथा।
मनसा कर्मणा वाचा सेवेत सततं सदा ॥5॥
मित्रेण कलहं कृत्वा न कदापि सुखी जनः।
इति ज्ञात्वा प्रयत्नेन तदेव परिवर्जयेत् ॥6॥



Diddesha .K

TOPIC

DATE

विद्यायाः महत्त्वम्

पण्डितैः उक्तं, यत् विद्याधनं सर्वेषु धनेषु प्रधानम्। विद्यायाः विषये संस्कृते बहूनि सुभाषितानि रचितानि, प्रत्येकसुभाषिते विद्यायाः महत्त्वम् दत्तम्।

विद्या धनतुल्या अस्ति इति कथ्यते, परम् एतत् विद्याधनं साधारणधनवत् नास्ति, विद्याधनस्य व्ययेन तस्य क्षयः न, परन्तु तस्य वर्धनम् एव भवति, इदं विद्याधनं हर्तुं अपि न शक्यते, चौरेण वा राज्ञा वा तस्य हरणं न शक्यम्, अस्य विद्याधनस्य भारोऽपि न अनुभूयते, विद्याधनस्य भ्रातृषु विभाजनम् अपि न कर्तुं शक्यते, विद्या तु सत्यमेव सर्वधनप्रधानम्, प्रवासेषु विद्या मित्रम् इव भवति अस्ति।

विद्यायाः कारणात् मनुष्यस्य तेजः वर्धते, विद्या परमं भूषणम्। विद्यया एव मनुष्यस्य कर्यक्षमता वर्धते, सर्वेषु जीवेषु मनुष्यः विशेषः, यतः तस्य समीपे विद्या वर्तते, अतः विद्याविहीनः जन पशुवत् एव अस्ति, ज्ञानेन मनुष्यः जगति कीर्तिवान् भवति, तस्य ज्ञानसम्पत्तेः कारणात् सः सर्वत्र सम्मानितः भवति।

विद्यायाः विषये, सत्यमेव उक्तम् -
'विद्या परमं बलम्,'

सुखं प्राप्तुं विद्यार्जनम् अवश्यकम् अस्ति।

S-11

नाम - बंचिता सरुआ
कक्षा - 5

TOPIC

DATE

श्रीकृष्णः

श्रीकृष्णः विष्णोः अष्टमम् अवतारम् श्रीकृष्णः भारतीयानां आराध्य-दैवता। गोपालः, वासुदेवः पुरुषोत्तमः च श्रीकृष्णस्य अन्यानि नामानि।

श्रीकृष्णस्य पिता वासुदेवः माता देवकी च। श्रीकृष्णः वसुदेवदेवक्याः अष्टमः पुत्रः। तस्य जन्म मथुरायां कारागृहे अभवत्। श्रीकृष्णः द्वारकायां मथुरायां च निवसति स्म। बलरामः तस्य भ्राता। सः सान्दीपनि-मुनेः शिष्यः। सुदामा तस्य प्रियं मित्रम्। श्रीकृष्णस्य पत्नी रुक्मिणी।

बाल्यकाले सः 'वृन्दावन' इत्यत्र वसति स्म। यशोदामाता तस्य पालनम् अकरोत्। तस्मै नवनीतं रोचते स्म। बाल्यकाले एव तेन तेन राक्षसाः हताः।

महाभारतस्य युद्धप्रसङ्गे सः अर्जुनस्य सारथ्यम् अकरोत्। तदा सः श्रीमद्भगवद्गीताम् उक्तवान्। सः एकः उत्कृष्टः शासकः, दुष्टानां संहारकः सज्जनानां रक्षकः च आसीत्।

श्रीकृष्णः मम प्रियः देवः अस्ति। ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

—— × ——

नाम - बंचिता बरुआ

कक्षा - IX

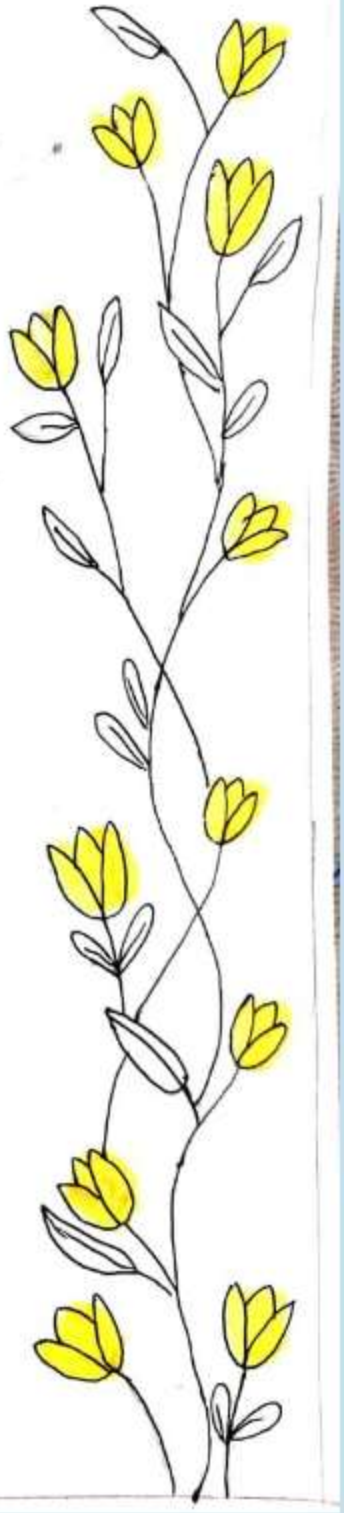
Oddy Stationers

प्रकृतिः

प्रकृतिः माता सर्वेषाम्
बहूनाम् अपि फलानाम्
बहूनाम् अस्ति वृक्षाणाम्
पुष्पाणाम् चापि मातेयम्।
भ्रमराणां, पशूनां,
पक्षिणां च मातास्ति
जैवेभ्यः जीवनं सदा
ददाति प्रकृतिः माता॥
आस्ति सा तु मनोहरी
मातृणाम् अपि माताऽस्ति
प्रकृतिः माता सर्वेषाम्
नमोऽस्तु ते मातः प्रकृत्यै॥

Name - Nourshin Zabarnum
Class - IX

माँ



माँ, माँ त्वम संसारस्य अनुपम् उपहार,
न त्वया सदृश्य कस्याः स्नेहम्,
करूणा- ममतायाः त्वम् मूर्ति,
न कोऽपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति ।

तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति,
'माँ' शब्दस्य महिमा उपार,
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार ।

या मां प्रातः शय्यातः
जागरयति संबोधनतः।
दरस्मिरणं या कारयति ।
आलस्यं मम नाशयति ।

कुरू दत्तं ग्रहकार्यम् त्वम्,
कुरु सुत । पाठ्यांसं त्वम् ।
आदेश ददती एवम् ,
योजयते कार्ये नित्यम् ।

एषा मम धन्या माता ।

नाम - दीपान्दिता उपाध्याय
कक्षा- IX

अनुशासनं

निर्धारितानां नियमानां पालनम् गुरूणां च आदेशानुपालनम् अनुशासनम् कथ्यते। व्यक्तेः समाजस्य च विकासाय अनुशासनस्य महती आवश्यकता भवति। अनुशासनेनैव राजमार्गे यानानि सुरक्षितानि चलन्ति, जनाश्च समाजे निर्भयाः निवसन्ति। कश्चित् जनः कस्यचित् स्वत्वं न हरति स्वयं च सुरक्षितः तिष्ठति इति अनुशासनस्यैव प्रभावः। सूर्यः समये उदेति अस्तं च गच्छति। आकाशे असंख्यानि नक्षत्राणि अनुशासने एव वृद्धाः स्वस्वमार्गे चलन्ति। जलधिश्च अनुशासने एव तिष्ठति किं बहुना सर्वं विश्वं। निश्चितेन अनुशासनेनैव संचालितं भवति। यत्रकुत्रापि अनुशासनविघातः भवति तत्र महत् संकटम् आपतति। एतेन स्पष्टं भवति यत् अनुशासनं सहजं प्रकृतिप्रदत्तं कर्म अस्ति। मानवः आत्मनः अहंकारणात् यदा अनुशासनं त्यक्त्वा उच्छृंखलम् आचरति तदा विविधानि संकटानि आमन्त्रयति। चौरः लुण्ठकाः अन्यानि च असामाजिक तत्त्वानि अनुशासनं परित्यज्य समाजाय अभिशाप-रूपाणि भूत्वा जीवन्ति। अनुशासनमनुसरन्तः जनाः सर्वेषां प्रियाः भवन्ति निरन्तरम् उन्नतिं समृद्धिं च अनुभवन्ति। एतद् विपरीतम् अनुशासनहीनाः जनाः सर्वेषां घृणास्पदं भूत्वा नारकीयं जीवनं यापयन्ति। अतः अस्माभिः सदा स्वजीवन साफल्याय अनुशासनं पालनीयम्।

नाम- दीपान्विता उपाध्याय
कक्षा - IX

दूरदर्शनस्य लाभाः नष्टाः च

नाम : प्रतिज्ञा दास
कक्षा : ७

अस्माकं जीवने दूरदर्शनस्य स्थानं अतिमहत्त्वपूर्णं भवति। सर्वेषु दूरदर्शनस्य अवश्यम् घटकं भवति। यथा अन्न अपि च तथा जीवने अनिवार्यं घटकं दूरदर्शनं। एतमध्ये सार्वत्रिकं ज्ञानं किं वा संज्ञानमिति चस्मिन् एव निमिष क्षणेषु दर्शनसाध्यम् करोति दूरदर्शनम्। एका सुहृदित अस्माकं समीपे स्थित्वा सर्वाणिकार्याणि कथयति दूरदर्शनम्।

दूरदर्शनस्य गुणाः दोषाः च सन्ति।

दूरदर्शनम् सर्वाभिः बालान् वृद्धान् च विज्ञापयति। अमेरिकादेशे संजातम् कार्यमपि तस्मिन् क्षणे एव अस्माकं भारतदेशे वर्त्तमानकाले द्रष्टुम् शक्यते। आधुनिकाले यत्रकुत्रापि संजाता वार्ता क्षणेनैव भवने दूरदर्शनद्वारा प्रसारयन्ति। पुरातनकाले एवं नासीत्। दूरदर्शनस्य 'रियालिट्टी शो' द्वारा कलाकाराणां कलाकारिणां च सर्वप्रतिभां वर्धयितुं शक्यते। दूरदर्शनेन द्वारा गीतानि श्रोतुम शक्यते। चलचित्रं द्रष्टुम् शक्यते। महात्मानां जीवनचरित्रं तेषां महत्वं च द्रष्टुम् शक्यते।



अंग्रेजी विभाग
English Section

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

The magic of being in the present

-Krishanu Kashyap Dutta, XI Sc

Many People have the habits of dwelling over past or worrying about the future or just thinking about the 'what if's'. All of these result in us missing out the things happening at the moment, and missing out the magic and miracles that everyone has to offer. The people who do not know how to enjoy and appreciate the present can never be truly happy as they are always busy about worrying and wondering about things that passed and the things that are to come.

One of the secrets of being truly happy lies in being present at the moment. It can definitely affect one's mood, personality and in the big picture, one's life. Growing up, I was also someone who was lost all the time thinking about the future. I didn't dwell over the past though, may be because I didn't even have a past to dwell over at that time. But still I struggled to be in the moment and it had definitely affected my mood and my overall personality. Once I made the most 'dramatic' and 'life changing' decision of my life as a twelve years old child to live and cherish the present. With time, I learnt to be present in the moment and cherish the little things in life. I learnt to be grateful for all blessings in life.

So, speaking about personal experience, being present in the moment can truly bring magic to one's life.

Dream big

- Tonshree Tayung, XI Science

Dream big and reach the sky.
Spread your wings and learn to fly.
Every step, great or small,
Helps you rise and stand tall.

Face each challenge with a smile.
Keep moving forward mile by mile.
Believe in yourself, come what may,
And let your light shine every day.

With hope and courage in your heart,
You can make a brand - new start.
Dream big, work hard, and you'll see,
The best version of you can be.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

THE TIME WE NEVER NOTICE

- Abhishek Chanda, XI Science

Rohan glanced up at the clock above the classroom door. Three months still stood between him and the board exams. Three whole months. To him, it seemed like an eternity. "There's plenty of time," he thought, sliding his books into his bag once the final bell echoed across the room.That night, he meant to go over Chemistry. Instead, he got caught up watching a couple of videos online. One turned into three, then ten. Before he realized it, midnight had arrived."Ill start tomorrow," he told himself. Then tomorrow slipped into next week. And next week slid right into next month.

Days drifted by, quiet and unnoticed. School, tuition, homework mixed in with scrolling through social media, chatting with friends, and a steady stream of plans about what he would do later.

One morning, his class teacher wrote on the board: "What would you do if someone gifted you an extra hour every day?" The class buzzed with answers.

"I'd sleep more."

"I'd play sports."

"I'd study."

"I'd watch movies."

The teacher smiled, letting everyone speak. Then she asked, "What if I told you that you already have that extra hour, but you spend it without realizing?"

Everything went quiet. She started explaining how little pockets of wasted time pile up. Ten minutes here, fifteen there, half an hour just doing nothing. By the end of the day, those bits add up to way more than an hour.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Rohan shrugged it off at first. That night, though, he decided to keep track. He wrote down everything he did, minute by minute. What he found shocked him. Almost two hours had just vanished on things he barely even remembered. For once, he saw the real problem. He wasn't running out of time. He was letting it just slip right through his fingers. The next day, he made a few small changes. He didn't wait for motivation. He just studied for thirty minutes. Instead of mindlessly scrolling before bed, he revised a chapter. Instead of putting things off, he finished them right away. These changes felt tiny. But as the weeks passed, something shifted. One chapter turned into three. Three turned into ten. He felt more confident. More than that, he felt in control. When exam season finally landed, panic swept through the school. Everyone complained about not having enough time. Rohan recognized the feeling. He said the same thing not long ago. Now, though, he understood something new. Time wasn't the problem. The real test was learning how to respect it. Months later, after the exams, he walked past the same classroom and saw that old clock still ticking above the door. He paused and smiled. THE CLOCK HADN'T CHANGED. Every student still had the same twenty-four hours. But the person using it had changed. Life almost never changes because of some huge, dramatic choice. More often, it's the little choices, made day after day, that shape everything. Success, friends, skills, memories- all grow out of ordinary moments. Time is our most valuable gift. It's the only one we can't set aside for later. It's not about how much time I have. It's about what I do with the time that's mine.

सत्यं वद धर्मं चर
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

The Mystery of Black Hole

-Syed Sahim, XI Science

Have you ever wondered what lies in the darkest corners of space? One of the most fascinating objects in the universe is a black hole. Although we cannot see a black hole directly, scientists have learned a lot about them through research and advanced telescopes.

A black hole is a region of space where gravity is so strong that not even light can escape. This is why black holes appear completely black. They are formed when very large stars run out of fuel or collapse under their own gravity.

Around every black hole is a boundary line called event horizon. Once an object crosses the event horizon, it cannot escape the black hole's powerful pull. However, black holes do not wander around space sucking everything towards it. Objects that are far away can safely orbit them, just as the planets orbiting the sun.

Black holes come in different sizes. Some are only a few times more massive than the sun, while others are called SUPPERMASSIVE BLACK HOLES and contain millions or billions of times the Sun's mass. Scientists believe that a supermassive black hole exists at the center of most galaxies, including our galaxy, the Milky Way.

For many years, black holes were only a theory. It was until 2019, scientists captured the first-ever image of a black hole proving once again how powerful modern science and technology have become.

Black Holes remain one of the greatest mysteries of the universe. By studying them, scientists hope to learn more about space, gravity, and the origins of the cosmos. As technology improves, we may uncover even more secrets hidden within these giants of space.

Time moves slower in black holes due to its strong gravitational pull. Black holes remind us that the universe is full of wonders waiting to be explored.

Perhaps one day, future scientists and astrologers will unlock the deepest secrets about the universe.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

The Unconquerable Mind: Human Intelligence in the Age of AI

-Aryan Kumar Thakur, XI Science

We are currently living through the most significant technological transition in human history. With the rise of advanced Artificial Intelligence, algorithms can now compose music, write complex code, diagnose diseases, and process petabytes of global data in milliseconds. This massive explosion of technology has sparked a profound global debate: Will machines eventually replace the human mind?

According to data from global tech research organizations, while AI excels at pattern recognition and quantitative speed, it lacks the foundational pillars of human consciousness. Machines operate on probability; humans operate on purpose. A computer can analyze the physics of a structural blueprint, but it cannot feel the passion of the architect who built it. This distinction is where the future of education and human capability truly lies.

The true purpose of modern education is not to compete with machines in terms of data storage or rote memorization. If we judge our potential merely by how many facts we can remember, we undervalue our greatest asset. Our real strength lies in our cognitive flexibility—the ability to look at a broken system, feel empathy for those it affects, and use creative problem-solving to rewrite the rules.

As we step into a data-driven global future, we must learn to use technology as a powerful tool while sharpening our uniquely human traits: critical thinking, deep empathy, leadership, and moral courage. The algorithms of the world will continue to evolve, but the capacity to inspire, to care, and to vision a better tomorrow remains an exclusive privilege of the human mind. The future does not belong to technology alone; it belongs to those who use technology to amplify humanity.

The Ridge of Youth

-Ayonav Sarmah, XI Science

Sixteen years of concrete streets left far behind,
To chase the mist where earth and heaven intertwine.
A holiday of open skies and mountain breeze,
That whispers through the valleys and the ancient trees.

At Laitlum's edge, where world drops into deep, green space,
He meets his steed, a creature born of wilder grace.
A nervous breath, a hand upon the leather rein,
The first horse ride across the Meghalayan plain.

The saddle shifts, the hooves strike rhythmic on the stone,
A sudden thrill of strength he's never known.
As up they climb toward the canyon's dizzying height,
The boy becomes a rider in the shifting light.

The wind sweeps up the gorge, a cool, intoxicating rush,
Breaking the quiet of the morning's emerald hush.
Sixteen and soaring where the clouds and canyons meet,
With all the wide, untamed tomorrow at his feet.

From School Ground to KVS National Field

- Prince Sonowal,
XI Science

Being selected for Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS) National Sports Meet not once, but three times, has been one of the most defining experiences of my school life. What began as a simple passion for sports gradually transformed into a journey filled with discipline, exposure and unforgettable memories. Representing my school at the regional and national levels gave me the opportunity to travel to different parts of the country and explore various kendriya vidyalayas. Each place had its own culture, environment and energy, which made every event unique. From the excitement of stepping into a new campus to the nervousness before competitions, every moment contributed to my growth. One of the most valuable aspects of this journey has been the people I met along the way. Interacting with students from different states allowed me to build friendships beyond boundaries. Despite speaking different languages and coming from diverse backgrounds, we were all connected by the same spirit of sportsmanship. These interactions not only improved my communication skills but also helped me understand different perspectives and cultures. The competitions themselves were intense and challenging. Competing at the national level pushed me beyond my limits and taught me the importance of consistency, hard work and mental strength. Winning was important, but what mattered more was the experience of giving my best and learning from every match. Apart from sports, these events taught me life lessons that go beyond textbooks. Time management, teamwork, handling pressure and staying focused in tough situations are qualities I developed during this journey. The support from my teachers and school played a crucial role in motivating me to perform better each time.

Looking back, being a part of KVS has not only shaped me as a player but also as a person. It has given me confidence, independence and a sense of pride in representing my school on such a big platform. As I move forward in life, these experiences will always remain close to my heart, reminding me that with dedication and determination, one can achieve great heights.

LIGHT

-Jigyasha
XII Science

Light is the hope
that fills courage in every sphere.

It comes softly after every night,
turning darkness into light
and fear into strength.

Light lives within every dream we hold,
in acts of kindness and in each of our hearts.
It glows through moments of doubt and pain,
whispering that brighter days will come again.

Like a diamond that reveals its brilliance when touched by light,
our true strength shines when hope guides our way.
Even the smallest spark can brighten the deepest dark,
reminding us that no shadow lasts forever.

So, carry your light wherever you go,
and let hope and courage lead your path.
Share your kindness, let your spirit shine,
and inspire others with the warmth you hold inside.

For when we share the light within us,

the world grows brighter, far and wide,
and together we become a beacon of hope
for every heart searching for the dawn.

Scared Heaven

-Gargi Bora, XI Science

The crispy bites reminds me of the crispy rain,

As the silence I attain

My pen is running out of stain

My thoughts are running insane

The dolls on my floor reminds me of the childhood I never hold

Even so I smile ten fold

How can I not spark a grin at those little tactics of th' little girls who indeed holds the childhood I never hold

Certainly a beautiful day to start with crispy bites and crispy rain

With a reminder of being someone, someone can hold onto sweet refrain.

As heaven's tears touch my face,

Until I can't remember the scared place.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

The Blues

- Swastika Handique
XI Humanities

In my own eyes,
I can see the deepness of the abyss,
Not enough life,
But once it used to.

Gathered blue,
That will never flow again.
Eyes will feel the first ripple,
When it touches the shore.

The clock is moving at its own motion,
Leaving the depth far away,
Sparkes floating, Sinking unseen.

तत् त्व पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Never gonna see the sky,
And flow ceaselessly.
Carrying its own desire,
And its ability to see.

A Railway Quarter

-Jagriti Kashyap Bora
XI Humanities

The child who stands on her courtyard
For a whole day to watch
The trains, the passengers,

The child loves to see the trains
as well as the various
kinds of passengers.

The child loves to hear
The trains' horns,
The child loves the noise of
A rushing train.

तत त्वं पूषन अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

She enjoys the environment
When the train arrives
In its station,

Now, she gets to knows the
Timings of all the trains.....
She resides in a railway quarter
Because her father is
A railway employee,
That's why it was easier to

Know the timings of
All the trains.

Now, she gets to know slowly
About the railway department,
About the various positions
And ranks of the employees.

Now the innocent little girl
Learn the similarity between
Life and a train.
She has understood that life is
Also, a train.

During the journey, we meet
Lots of people,
Who are strangers for us.
But gradually they become
Our beloved one, our closest one.

There comes a time when
We are bound to go far
From our beloved one.
Everyone shares the same journey,
But each must alight at
Their destined station.

Dusting hearts

- Shivangi Kotoky, XI Humanities

I miss the days when fear was small,
No louder than a mother's call,
To nap beneath the afternoon sun,
While time moved slow, and life was fun.

Back then mistakes were painted bright,
Not shadows stretching into night,
They lived, they laughed, then drifted away,
Unlike the ones that haunt today.

We didn't measure, we didn't weigh,
Each word we spoke, each game we'd play,
"Ghar-ghar" dreams in dusty air,
A world of nothing, yet so much care.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

The yard still holds those echoes tight,
Of barefoot races, fading light,
And sometimes, in a passing breeze,
My childhood whispers through the trees.

Now days are rushed, and hearts confined,
We trade our joy for peace of mind,
Too "busy" now to make that call,
Yet doing nothing, after all.

That friend who knew my truest laugh,
Now lives somewhere in memory's half,
A number saved, a silence kept,
A bond untouched, a promise slept.

Why do we hide our foolish side?
The one that never cared for pride,
Why can't we lose, like we once did,
In games where joy was never hid?

Maybe the truth is hard to face
We outgrew time, but not that place,
Where living meant just being there
With messy thoughts and untamed hair.

So here I stand, on borrowed night,
Before an exam, before the fight,
Not fearing marks, but what we've missed
A life once simple, now dismissed.

If moments fade, then let them stay,
Alive in words we dare to say,
For sometimes healing softly starts
By dusting off our younger hearts.

A journey to the human core- a weapon

Abhismita Pathak, IX

People consider themselves extraordinary from machines as, we humans; have created them. Which is true, but partially. We humans have emotions; also a ability to feel others emotions, that is what is makes us extraordinarily different. This ability of understanding the minds, is, the analysis of psyche(mind) or psychology.

What is psychology?

Psychology is the scientific study of minds and the way people behave. It is the analysis of the type of mind that a person or a group of people has. The word psychology is derived from two words-- 'psyche', meaning soul or mind and 'logos',means- a rational study. In simple it means 'the science of soul, behavior and consciousness'.

Why study psychology?

To understand the motive behind studying this vast topic is very simple. Study of it enable us to communicate better with the universe and ourselves. It can conqueror people's mindthe way they think and acts. Lets understand this better; a company advertises it's product in such a way that it captivates our minds and makes it belive it's worthy. Another, instances is- Nazi Germany. It was Hitler's determination to make Germany a mighty power. But this determination turned to cruelty. Hatred for Jews was never the aim of German civilians, it was Hitler who hated. Hitler's propaganda was playing psychologically. He controlled people's mind by proclaiming himself as saviour. He played with the minds of innocent civilians psychologically and achieved a Nazi state. This is a great example to understand, the importance of studying psychology. Also, with the study ofthis one can direct the youth. By youth, I meant the adolescent population, we teenagers. In my perspective and experience, Our mindset is very fragile. It can be easily shaped. That is we are easy to be manipulated. So, it is very important for us to Lear about our minset. Also, the one guiding us, should be also aware of our mindset. Teachers is a Vital role in our life, that is why I think along with degrees they should also know about this. I know, our guardians, Teachers and elders have went through our stage and experienced. But time has changed, problems and situations have changed. They might now not know what we are dealing with. I once remember my teacher asked at the beginning of 9th grade, why so change. Back then i didn't knewmthe answer but I tried replying but now I feel that more like an excuse rather than a answer. But now I think I know. The reason for us changing so much in 9th could be explained as- we humans are very fond of liked by others. It's a

characteristics of us. Its stays in all ages. In teenage it grows more and we desire to be loved by everyone. So to be loved by everyone we do many certain so called cool things. Which we think as cool. And upon promoted to 9th we feel a seniority and urge for a change. This leads to a drastic change. And This was the change noticed by my teacher. the motive of this article is to introduce psychology, it's importance and it's real life situation with the teacher example. Also, in our country people don't really give importance to the mental peace of a person. Even a little stress can change into a dangerous behavior. There are several instances, where people keep silently dealing with their anxiety, trauma and past experience and later the level of tension grows so much that the person looses his self control. Therefore, there's this another motive of this articleto make our country's youth and people aware of the danger, a little anxiety or trauma can shape into.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

~~ MIDNIGHT CRISIS ~~

-Adi Apurba Bori, Class IX

In the glowing dark,
There is still a spark.
Thinking about the unspoken,
Which left me broken.

Hundreds of questions, none with replies,
Hidden truths and silent cries.
Living through the day, I act my part,
But it is only midnight which reveals my heart.

Noises in my head, maybe they will cease.
And finally I could stay in peace.
Until then, I will fight the silent wars,
The wars that lives inside me.

🧠 Mind-Blowing Science Bites

-AMLANJYOTI HAZARIKA, XI SC

- **Banana DNA:** Humans share about **50%** of their DNA with bananas. You're basically half-fruit!
- **Space Growth:** Astronauts can grow up to **2 inches taller** while in space because their spines expand without gravity pushing them down.
- **Honey Never Spoils:** Archaeologists have found pots of honey in ancient Egyptian tombs that are over **3,000 years old** and still perfectly edible.
- **The Power of a Sneeze:** A single sneeze can travel at **100 miles per hour** and send 100,000 germs into the air.
- **Octopus Hearts:** An octopus has **three hearts**, nine brains, and blue blood. They are basically the closest things to aliens on Earth.
- **Metal Melts in Your Hand:** There is a metal called **Gallium** that has a melting point of only **29.7°C** (**85.5°F**). If you hold it, it will turn into a liquid puddle in your palm.
- **Saturn Floats:** If you could find a bathtub big enough, the planet **Saturn would float** in water because it is mostly made of gas and is very light for its size.
- **Rabbit Vision:** Rabbits can see behind them without even turning their heads! Their eyes are positioned on the sides of their skulls, giving them a **360-degree** view.

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

💡 "Did You Know?"

The lightest solid on Earth is called "Aerogel." It is 99.8% air and looks like solid smoke. Even though it looks like a ghost, it can support the weight of a brick!

✸ Mind-Blowing Science

Hot Water Freezes Faster: Under certain conditions, hot water can actually freeze faster than cold water. This is called the Mpemba effect.

A Cloud Weighs a Ton: An average fluffy white cloud weighs about 500,000 kilograms—that is the same as 100 large elephants!

The Tallest Mountain is Underwater: Mount Everest is the highest above sea level, but Mauna Kea in Hawaii is the tallest from base to peak. Most of it is hidden under the ocean.

Trees are Oxygen Factories: A single leafy tree can produce enough oxygen in one season to keep 10 people breathing for a whole year.

Butterfly Feet: Butterflies don't use their mouths to taste their food—they taste with their feet!

No Burping in Space: Because there is no gravity to separate liquid from gas in their stomachs, astronauts cannot burp in space.

The Immortal Jellyfish: There is a tiny species of jellyfish (Turritopsis dohrnii) that can hit the "reset button" and turn back into a baby whenever it gets old or hurt. It can technically live forever.

Your Heart is a Pump: Your heart beats about 100,000 times a day. In a single year, it pumps enough blood to fill an entire Olympic-sized swimming pool.

Lightning is Hotter than the Sun: A bolt of lightning is five times hotter than the surface of the Sun!

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Alibi-of the self ?

~Amrita Priyadarshini Chutia

class 9

It was 7:30 PM, when the incident happened. But I wasn't there.....or was I?

Josie was in the kitchen preparing dinner.....at least, that's what she told the court. She had a full proof *alibi*. There were hissing sounds of pressure cooker, neighbours heard it. The prosecution had interrogated them. Every detail was checked.....yet something felt off.

Josie's eyes darted towards the courtroom clock as the judge cleared his throat. Every detail she had given was verified, every single witness accounted for—and still, a single question hung in the room like shadow: if she wasn't there.....who really was?

A faint creak echoed from the hallway. Heads turned. Josie's heart skipped a beat. The court seemed to hold its breath, waiting for the next piece of the puzzle to fall into place. It was her step-son, Nolan, who was not supposed to be there. He stepped into the courtroom, ready to tell a completely different story. Every confident statement Josie had made, every witness who had vouched for her—were all lying? Could it be that the truth has been carefully hidden beneath layers of rehearsed *alibis?*

The room went silent. The judge's gavel hovered in mid-air as everyone processed the revelation. Questions darted through Josie's mind like lightning: Had I been so clever, or had I simply been blind?

Nolan cleared his throat, eyes steady, voice calm. "What everyone say..... isn't the full story." A shiver ran down Josie's spine. The alibi she had believed was unbreakable suddenly felt fragile— like glass ready to shatter at the slightest touch. Nolan said "Yeah, she was in the kitchen....but not at the same time." A wave of murmurs ripped through the courtroom. Tension rose, hearts thumped and every eye turned towards Josey. The air felt heavier, as if the walls themselves were holding their breath.

The witnesses shifted uneasily in their seats. Their earlier statements now seemed in the verge of collapsing. Josie's hands trembled slightly, though she tried to mask it with a composed face. The prosecutor leaned forward, sensing the shift. "Explain yourself,

Nolan. What do you mean, 'not at the same time'?" Nolan's gaze was calm, almost unnerving. "Let's just say...the truth is never as simple as it seems."

At this point, the lawyer stood up and said, "Let's say the truth is not simple— and that itself is the truth. But how can we believe that you are telling the truth? Where is the evidence?" He turned towards the judge. "My lord, this witness itself is not legally valid, as the prosecution had not mentioned him earlier in the witness and proof list. Where did this witness come from? From nowhere? How can we trust his statements?" A heavy silence followed. The question didn't just challenge Nolan— it unsettled the courtroom, casting doubt on everything that had been said so far.

But prosecution was not willing to accept the defeat. "Your honour, it was our fault for not informing the court earlier. However, by rejecting this crucial witness, I dear the truth may never come to light."

The judge paused, deep in thought then stated. "To understand all aspects of the case and to determine the credibility of the witness, we must first hear what he has to say. Therefore, I permit Nolan to present his statement." Nolan thanked the judge then looked towards Josie. "She was indeed in the kitchen, but stepped out into the backyard for a while after turning the stove to low flame. She was gone for at least ten minutes. When she returned, she was carrying a few clothes in her hands. I didn't suspect anything at that time but now that I think of it....the clothes that she had been wearing earlier were mixed in with the ones she was holding. At the same time she was wearing an identical set. That is all I have to say, your honour."

That was the shattering point of Josie's *alibi.* It was finally proved that her alibi was not entirely true.

This was a tale of an alibi— one that was true, but not completely. There are things in this world that are true, yet not entirely so. There are lies that are not completely false either. There are moments we wish to keep hidden, and truths we hesitate to share. There are times when we make things up— when we create *alibis.* Sometimes to protect ourselves, sometimes to defend ourselves, and sometimes just to avoid being punished or conflict.

An *alibi,* in general, is a defense in criminal law asserting that a suspect was elsewhere when a crime was committed. In stories, an *alibi* can save a suspect or destroy a

detective's theory. Detectives like Sherlock Holmes and Hercule Poirot live for them— those tiny details that reveal where someone truly was. A slip, a glance, a forgotten receipt— and suddenly, all begin to fall apart. But in real life, we all have *alibis*. Late for class? "Traffic!" Forgot the homework? "Printer jammed!" Ate the cookie? "I thought it was yesterday's!" Some are harmless, some amusing, but all of them tell a story— about who we are, what we value, and how creative we can become under pressure.

And sometimes.....truth and lie blur. Even the strongest *alibi* can hide a secret, and even the small excuse can spark doubt.

So, what's your *alibi* today? And does it tell the truth.....or just a story you're still trying to write.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Student life: one of the most important and memorable parts of life

-Arpit bora, VII

Every day in school is different. Sometimes we enjoy classes, sometimes we feel bored, and sometimes we get stressed because of homework and exams. But all these things are part of student life. They teach us discipline, responsibility, and how to manage time.

For me, the best part of student life is my friends. We study together, play together, and share everything. Even on bad days, friends make school life fun and enjoyable. School events, games, and competitions also make this time special and exciting.

Of course, student life is not always easy. Exams can be stressful, and sometimes marks are not as good as we expect. But I think these challenges help us improve and become stronger. They teach us not to give up and to try again.

As a student, I am still learning and growing. I know that the habits I build now will shape my future. So, I try to work hard, stay positive, and enjoy every moment.

In conclusion, student life is a mix of fun, struggle, and learning. It is a time that we should value, because it will never come back again.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Review of *Totto-Chan: The Little Girl at the Window*

Name of the author: Tetsuko Kuroyanagi

Genre: Autobiographical/Memoir

-Bharati Borah, VII

'Totto-Chan: The Little Girl at the Window' is a very famous, heartwarming and deeply moving book written by a famous television personality Tetsuko Kuroyanagi about her own childhood. The story takes place in the southwest region of Tokyo during World War II. Totto-Chan was a young girl of five to six years, who was expelled from her school in the first week because her actions were considered 'disruptive' for her class. So, she is moved to a new school. A unique one. Where the classrooms were actually train boogies. Here, every child is given attention and is taught in the way they want. The name of this school is tomoe established by sosaku kobayashi, the sweet and beloved headmaster. In this school, children are taught to cherish their uniqueness. While the story is quite light hearted, it carries a deeper meaning. At the end of the book the school is destroyed as it shows the impact of war in the daily lives of people. This book shows the importance of individuality and uniqueness. I personally love this book, as the story is very relatable and I also like the way it is written from the perspective of little Tetsuko Kuroyanagi or Totto-Chan.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

"The Balloon and the Beach"

Farin Falak Mazumder

Class VII

I bought a balloon, it was bright shiny red,
It'll cheer up the park, is what I had said.

It floated and danced on a string in my hand,
The happiest sight in the whole of the land.

We passed by the pond and the big lovely tree,
It moved up and down, looking cheerful and free.

Then a guest came along, quite sudden and mean,
And snatched up the balloon, the best I've ever seen.

Now I sat on the bench where we used to sit down,
The saddest, loneliest little kid in the town.

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

The fun to buy balloons, I know that's true,
But they leave you behind with nothing to do.

Except watch them drift higher, lost from view,
Until they are tiny, lost in the blue.

A Journey to Shillong

-Prakritish Boro, VII

Shillong is one of the most beautiful places I have ever visited in my life, it's also known as "The Scotland of the East" for his scenic beauty of Nature and landscape etc. My Journey to Shillong was truly one of the most memorable experiences of my life.

Last year, during the summer vacation, I went to Shillong with my family. We started our journey from Guwahati by car early in the morning. The road to Shillong was full of green hills, beautiful valleys, and fresh air. As we moved higher into the hills this journey took roughly 3 to 4 hrs. In this trip, we see the beautiful mountains, rock-cut architectures how the nature made this Beauty. Also my suggestions is to must-see and stop in the Umiam Lake. You guys will be awestruck by its beautiful blue clean water and lush green hills. Umiam lake a vast man-made reservoir surrounded by the pine-covered hills and lively atmosphere. We have also done speed boating and kayaking at Umiam Lake. Also I do speed Boating first time in my life with my family members. Finally, we reach Shillong and we stayed in a hotel near Police Bazaar. Police Bazaar is the bustling heart of Shillong, Famous for its shopping, local Handicrafts and street food. Known as the "Rock capital of India", the city has a deep passion of western music, with live performances frequently held in local cafes like Dylan's café. Food is the central part of the Experiences. A trip to Shillong is more than just sightseeing: it's an immersion into a region where tradition and Modernity coexist harmoniously amidst some of India's most stunning landscapes.

So, the first day we arrived Shillong to Cherapunji, you guys also must-see and stop at Mawkdok Dympep Valley view point also we do zip line. Very amazing experience by Zip line but it's also dangerous. So, our next location is to Wahkaba Falls is a stunning two-tiered waterfall near Cherrapunji (Sohra) in Meghalaya, cascading down a deep, lush green gorge from a height of over 600 ft. It offers dramatic scenery, particularly during the monsoon, offering panoramic views of the surrounding lush valleys, from safely railed, viewpoints. So, next location is the Ramakrishna Mission Ashrama in Sohra (Cherrapunji), Meghalaya established in 1931 in a prominent spiritual and educational center serving tribal communities in North-east India, aimed at spreading the ideals of Swami Vivekananda.

Next location was Nohkalikai Falls, its India's highest plunge waterfall, cascading 335 meters (1,115 feet) into and Emerald-green pool. Known for its breathtaking, dramatic beauty and Tragic Legend, it's a top tourist

attraction in the East Khasi Hills, It's the highest plunge waterfall in India and the 4th highest in the world. So, our Next destination is to seven sister falls, Commonly Known as Nohsngithiang Falls or Mawsmai Falls, it is a spectacular seven segmented waterfall located near Mawsmai village in the East Khasi Hills district of Meghalaya, India. Next location is to Mawsmai caves is a thrilling, 150 meter long limestone cave. So, we also went to eco-park (Mawsmai Nongthymmai Eco-park), a top tourist destination developed by the Meghalaya government to showcase the region's natural beauty. It offers stunning panoramic views of the green canyons of Bangladesh. Also, we take lunch and taste local Khasi food every food is tasty and amazing smells touched my heart while watching the beautiful dramatic view of India-Bangladesh border. So, finally we finished the trip of the Cherrapunji. On Day -2 we went to Laitlum canyon trip in middle of the road you must stop to see the Smit village East Khasi Hills, is a scenic, pollution-free village known as a prominent cultural hub of the Khasi Tribe. It acts as the functional home to the Hima Khyriem (Khasi state) Royalty, featuring traditional architecture like the kaingsad and hosting the annual Ka Pomlang Nongrem dance Festival. So, Next destination is our Laitlum Canyon, meaning "End of the Hills", is a breathtaking, less-crowded natural wonder in Meghalaya's East Khasi Hills (Approx 25 km from Shillong). Known for deep gorges, Panoramic green valleys and dramatic clouds, it offers stunning "Edge of the world" view. Then, next destination was our cathedral church of Mary help of Christians is Shillong is a prominent Roman catholic church, serving as the seat of the architecture, the hilltop church is both a historic landmark and a peaceful pilgrimage site located on Laitumkrah hill.

Following destination was our Ward's Lake (on Non Polok) is a 100 year old, horseshoe-shaped artificial lake located in the heart of Shillong, close to police Baazar. It's a popular tourist spot known for its manicured gardens, relaxing, quiet environment, and easy accessibility, making it ideal for strolling and quick Nature visits. I went for boat rides with my family. It was a very joyful and adventurous experience.

The Day – 3, we went to Dawki trip, in middle road journey my suggesting is to that you guys must-stop and see the canyon Valley view point with very beautiful scenic views and relaxing view point, also it's good for our mind refreshment.

Next destination was our Riwai Living Root Bridge (Single Root Bridge) located near Mawlynnong in Meghalaya, is a stunning natural single decker Bridge Formed by intertwined Roots of Ancient Ficus Trees.

Next location was our Mawlynnong village, famously known as Asia's cleanest village (Declared in 2003/2005) situated near the India-Bangladesh Border, it's a model eco-tourism destination, featuring immaculate streets, bamboo dustbins, 100% literary, and a community driven Matrilineal society where property passes from mother to youngest daughter. Next destination is our Borhill Falls Border line Bangladesh, is a scenic views of Borders, triple-tiered waterfall situated near the Indo-Bangladesh Border in Meghalaya's Jaintia Hills, between Dawki and Lyngkhat. It's known for its intense flow, milky water appearance and immense power during the Monsoon, it acts as a sense, natural checkpoint where water flows directly from India into Bangladesh plains.

Next destination is our Dawki and it was last destination of my trip. Dawki is a picturesque town in Meghalaya, India, situated along the India-Bangladesh Border, famed for the crystal clean water of the Umngot River. It's a premier eco-tourism destination offering boating, camping and stunning panoramic views of the Jaintia Hills.

So, this my Shillong Journey, this journey was full of joy and excitement. It helped me understand the beauty of Nature. I will always remember my trip to Shillong as the Journey of my life.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

MY DREAM JOB

- Pranika Limbachiya, V

Dream Job is the job we always dream of doing it. My Dream Job is to be a Veterinary Doctor because I want to help injured animals and give medicine. In future I want to open a small clinic and take care of the animals. I want to treat animals. I want to become a Veterinary Doctor because I love animals.

I think that animals are a gift from God. They are beautiful creation of God. Animals like Dog are our Best Friend. Dogs are very Loyal and gentle.

For becoming a Veterinary Doctor, I have to study very hard I have to take science after class 10. After 12, I will have to do BVSc which will take 5.5 years. These 5 years I have to study very hard.

Once I become Veterinary Doctor I will take-care of all the animals, treat them and make them happy.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Before it fades

If there exists a presence
where you feel whole , without trying,
don't let it slip into silence,
softly fading , quietly hiding.

Sometimes the unexpected
meets what was always there,
like a whisper in chaos,
a calm in quiet air.

We treat the rare as common,
the bright as something small,
placing it in the background,
as of it won't leave at all.

But absence speaks in echoes,
in space that are left behind,
reminding , a little late,
of what we failed to find.

So if something feels gentle,
yet stronger than it seems-
hold it with quiet care,
before it fades.. like dreams.

Sayestha Bora [Class X]

Silence

-Tejoswee, XI Sc

Priya stood by the window, staring out at the pouring rain in the garden of their house. Suddenly, her nine-year-old daughter, Niki, came running out of the room, shouting,

"Ma, Ma! Look, it's raining! Can I go play in the rain? Please, Ma!"

Priya looked at her and gently said,

"Your father will be home soon. He will get angry if he finds you playing in the rain."

Disappointed, Niki quietly left the room.

Sometimes, Priya felt sad seeing how mature her daughter had become at such a young age. She was no longer as carefree and childish as other children—perhaps because of her fear of her father.

Priya's thoughts drifted to a conversation she had with an old friend at the market the previous day. Her friend had said,

"You are so lucky, Priya. You married into a well-off family and have a husband with such a good job. You must be living like a queen."

Priya was lost in her thoughts when she was suddenly startled by the loud bang of a slammed door. She knew her husband,Anil had returned from work. She hurried to greet him.

"Oh, you're back," she said softly.

Anil replied rudely,

"Can't you see? Go get some food."

Priya quickly went to the kitchen. As Anil began to eat, he suddenly shouted in anger,

"What is this? Did you forget how to cook? You came from a mad family, and now you're trying to make me crazy!"

In a fit of rage, he threw all the food onto the floor and stormed out of the house.

Niki stood there, frightened and crying.

Priya stared at the food scattered on the floor, feeling completely helpless. She had nowhere to go. Her father is terribly ill and her brother could not afford to take care of her and Niki. She did not even have a house of her own.

She had spent her entire life for a man who only hurt her and insulted her family. If she had a job, she could have taken Niki and left—but she had nothing. Not even the courage to step out and face the world.

She was just an ordinary housewife, with no support and no independence.

Priya looked at Niki and made a silent promise to herself—

she would never let her daughter live a life like hers.

She would make Niki strong and independent, so she would never have to suffer under anyone.

That day, Priya made her decision, silent, yet stronger than a scream.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Importance of Sports in academics Sports

-Khyati Bora,XI Sc

Sports and academics are correlated. Sports improve academic performance by enhancing cognitive function, increasing concentration and reducing stress through endorphin release. Exercise of any kind can increase blood flow to the brain which helps the body build more connection between nerves which enhances memory, problem-solving skills and stimulate our creative side. Playing sports professionally can also help students secure seats at top universities because of the reservation present for outstanding athletes. Student-athletes also develop essential interpersonal skills such as leadership, time management, accountability and collaboration. Athletes can transfer these skills and solid work ethic from the classroom to their future careers.

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

অসমীয়া বিভাগ

Assamese Section

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Name:- Drishtiraani Konwar.
2025-2026
Class:-(VII)7. Roll.no:-18.

স্বদেশপ্রেম

যেতেনে জনম কেরে এই ধৰণত
শিলাময় কৰি তাৰ হিয়া;
"এয়ে মোৰ জন্মভূমি" বুলি মনে মনে
এবাৰো যি কোৱা নাইকিয়া?
আনৰ দেশৰ পৰা ভৈলটি আহোতে
মুকৰি চাকি ধৰমুহা হৈ,
জ্বলা নাই মিয়া যাৰ স্বদেশ প্ৰেমেৰে
আছেনে কোনোবা মনে অ'ই?
আছে যদি মনে কোনো মনে কণ্ঠে-চিতে
চিনি যাবা তাক জানবৈ,
তাৰ বাবে সমস্ত বৈভৱ দৈলি
নুহৈ তাৰ শুণ গাবলৈ।



মানুহে মাকিলে তাৰ পেটৰ ভাষাত
দেশত ফটা-ফুটা নাম;
মানুহে মাকিলে তাৰ বিদেশী-বেগুৱা
কাজনাই চুকি পোৱা ঠাই।
কিন্তু তেনে স্বাৰ্থপৰ মুৰুকপলীয়া
নাপায় মিয়াতি ভদ্ৰলোক;
চুওন মনৰ পৰা ধুনিৰ মানুহ
মিলি যাব ধুনিৰ লগত।
তাৰবাবে কেৰে পেটেৰে জোনো
কেৰে তাক নকৰে সন্মান;
কবিয়ে কবিতা বটি নকৰে নকৰে
কেতিয়াও তাৰ শুণ গান।

বৃন্দাবনী বস্ত্র

শ্রী শ্রী

মহাপুরুষ শংকরদেবক মহারাজ নরনারায়ণে শ্রী কৃষ্ণক জন্মর পর্ব আদি করি কংস বধ লীলালৈকে কাপোরত চিত্রিত করিবর বাবে অনুরোধ করিছিল। সেই আদেশ মতে মহারাজর রাজভাণ্ডারর পরা বিবিধ সামগ্রী বং সূতা লৈ মহাপুরুষ শংকরদেব বরপেটালৈ গৈ তাত নাম-কীর্তন ঘর আছে সেই ঠাইত শিল্পী মধুরাদাস বুঢ়া আদি আরু শিল্পিনীর সহায়ত বৃন্দাবনী বস্ত্রখন প্রস্তুত করিছিল। বস্ত্রখনত বৃন্দাবন, মথুরাত কৃষ্ণর শিশুলীলার সম্বন্ধীয় সকলো কথার উল্লেখ করিছিল বাবে নাম রখা হৈছিল বৃন্দাবনী-বস্ত্র। তেবেলা ভাগত বিভক্ত এই বস্ত্রখন তৈয়ার করিবলৈ প্রায় এবছর সময় লাগিছিল। ১২০ হাত দীঘল আরু ৬০ হাত বহল বস্ত্রখন রজা নরনারায়ণে বর অন্থানেরে রাজসভাত রাখিছিল। কিন্তু ইংরাজ শাসন কালত ব্রিটিছসকলে এই বস্ত্রখন লণ্ডনলৈ নি ব্রিটিছ মিউজিয়ামত সুরক্ষিত করি থাকিছিল। বর্তমান অসমর চরকারে ব্রিটিছ সংগ্রহালয়র সৈতে এক বুজাবুজিত চুক্তি স্বাক্ষর করিছে, যার অধীনত এই বস্ত্রখন ১৮ মাহর বাবে ২০২৭ চনত অসমলৈ আনা হব। বস্ত্রখন সুরক্ষিতভাবে ঢেকেই থিয়র বাবে ভারতর বস্তুলাভিয়ে তেখন প্রতিস্রুতি পত্র সেৱন করিব লাগিব, তেই বস্ত্রখন সুরক্ষিতভাবে রাখিবলৈ গুৱাহাটীত আন্তঃবাষ্ট্রীয় মানদণ্ডর এক বিশেষ সংগ্রহালয় নির্মাণ করা হব। তেই সমস্ত প্রক্রিয়াটোত কেন্দ্রীয় চরকারে আরু ব্রিটেইনত অবস্থা ভারতীয় রাষ্ট্রদূতর সহযোগিতা>

লোকপাল বিল । ২৬ নভেম্বর এই গুরুত্বপূর্ণ সংবাদ
শুনতে আমাদের গ্রামের প্রত্যেক ব্যক্তিই আগ্রহী
জানার জন্য তক্ষে তক্ষে থাকব । ধন্যবাদ ।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

নদী হোৱা হ'লে

নদী হোৱা হ'লে
বৈ গলো হয়,
সাগৰৰ তলিতেই
লগ হলো হয়।

আকাশক গাতে লব বিচৰা
'ভোমাক' সুধিলো হয়
কিমান মহান হলে
মানুহ 'জুবিন' হয়?

কৰা নেকি তুমি অন্তিম দৰে উন্মাদ
নে মৰমতকৈ শীতল?
মায়াবিনী ৰাতিৰ
প্ৰতিটো তৰাক কৰালে
ইমান অভিমান কিহৰ?

লক্ষ্য জনতাক উঠি কৰ পাৰিবানে
সহস্ৰ ৰাতি উজাগৰে থকা 'তুমি'
আজি কফিনতে টোপনিত কিয়?

NAME- Barnali Saikia
Class-9

आर्ट गैलरी
Art Gallery

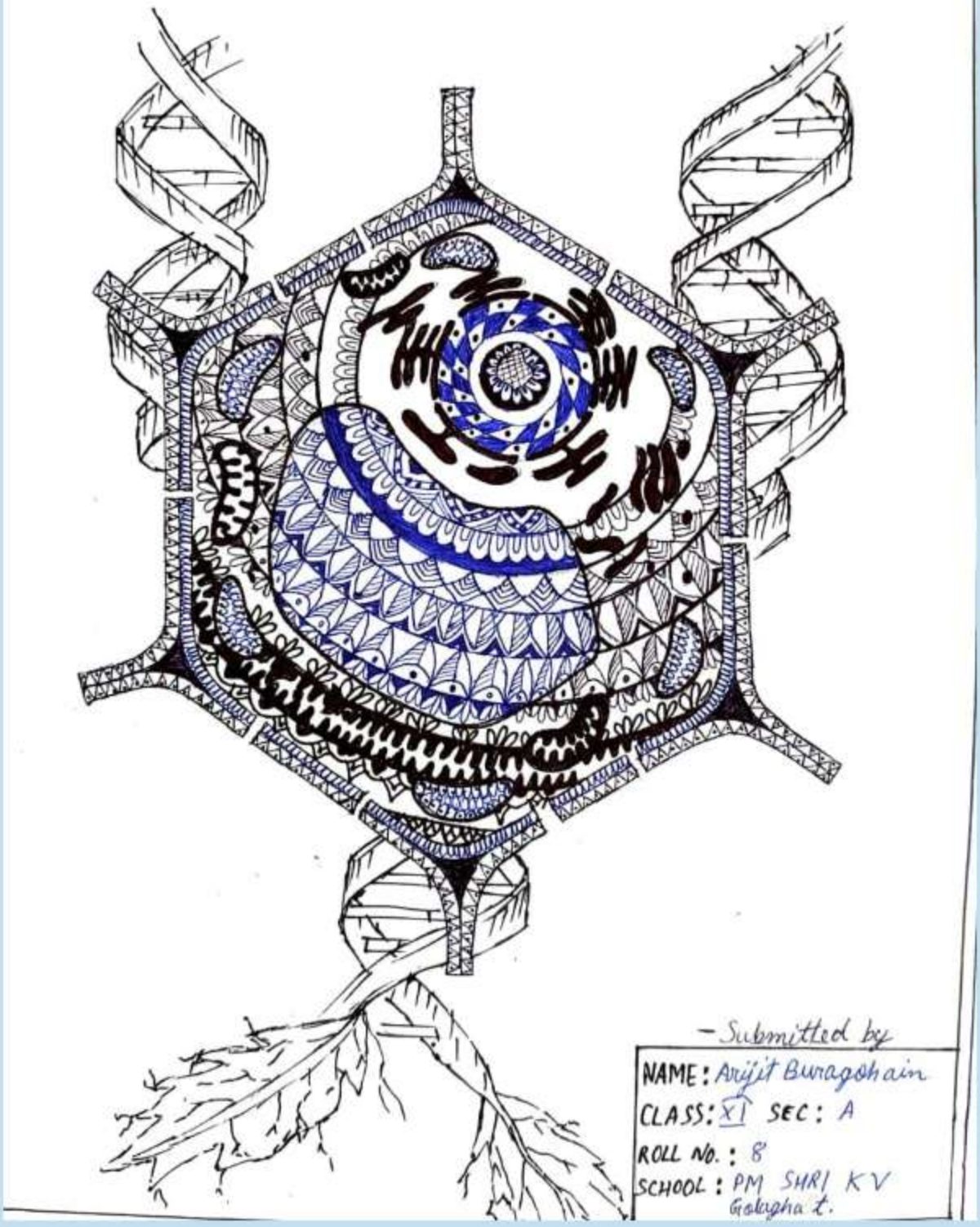
तत् त्व पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन





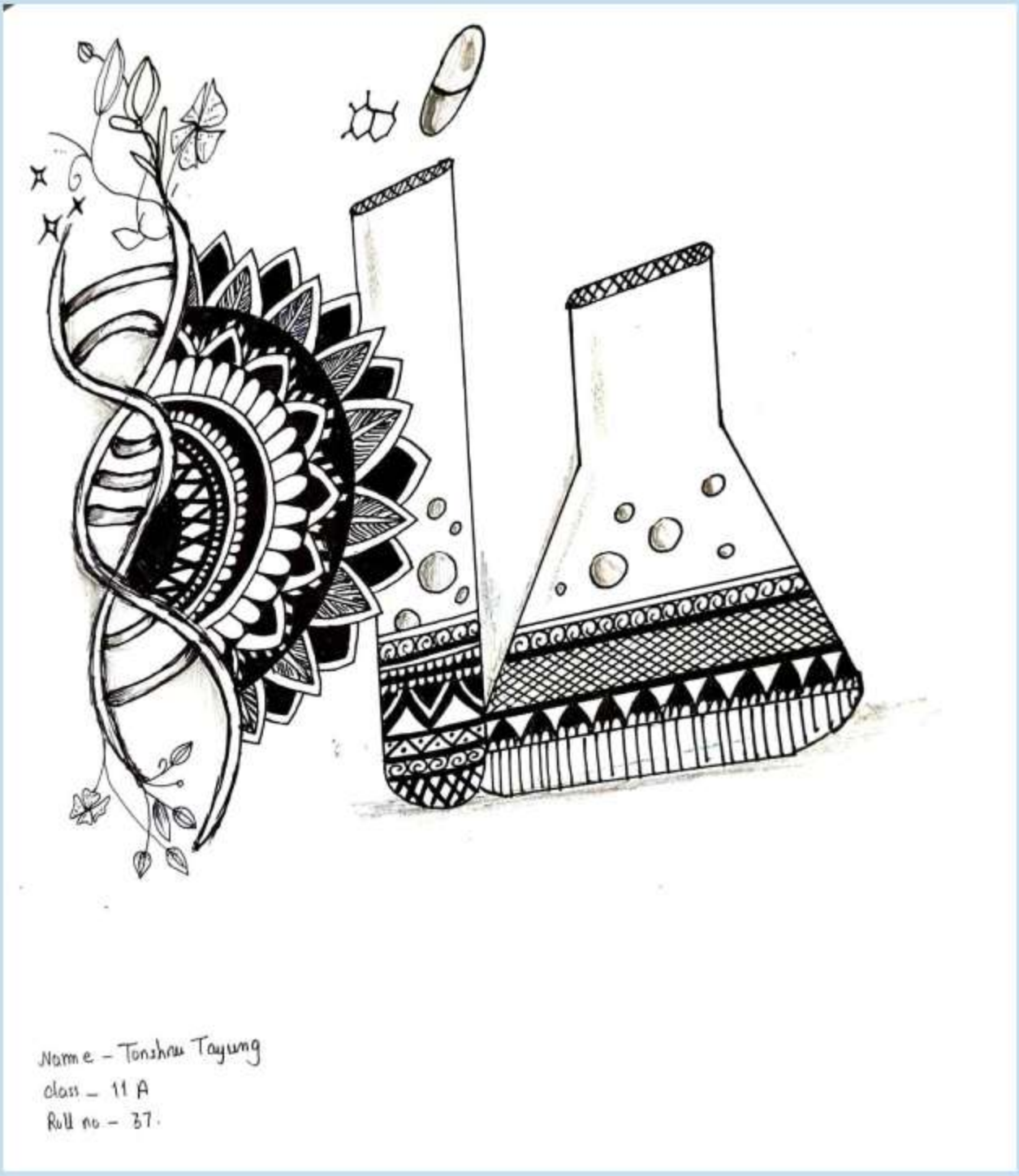


TOPIC : SCIENTIFIC RANGOLI.



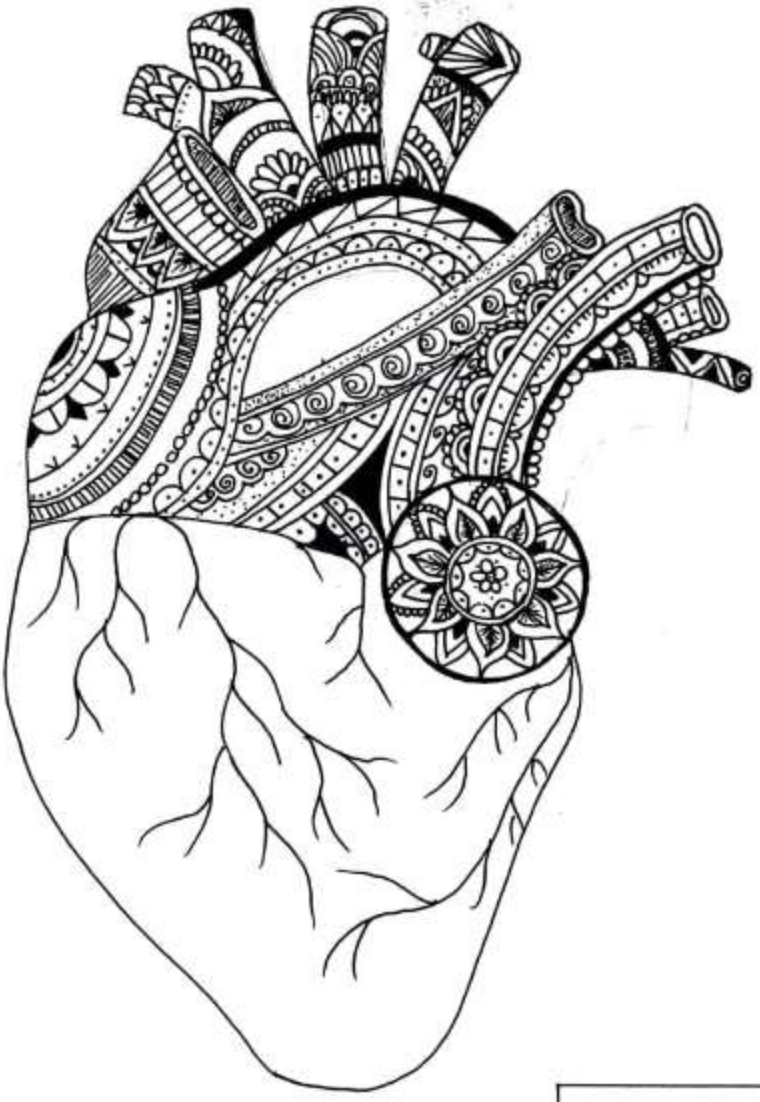
- Submitted by

NAME : Arijit Buragohain
CLASS : XI SEC : A
ROLL NO. : 8
SCHOOL : PM SHRI KV Golaghat.



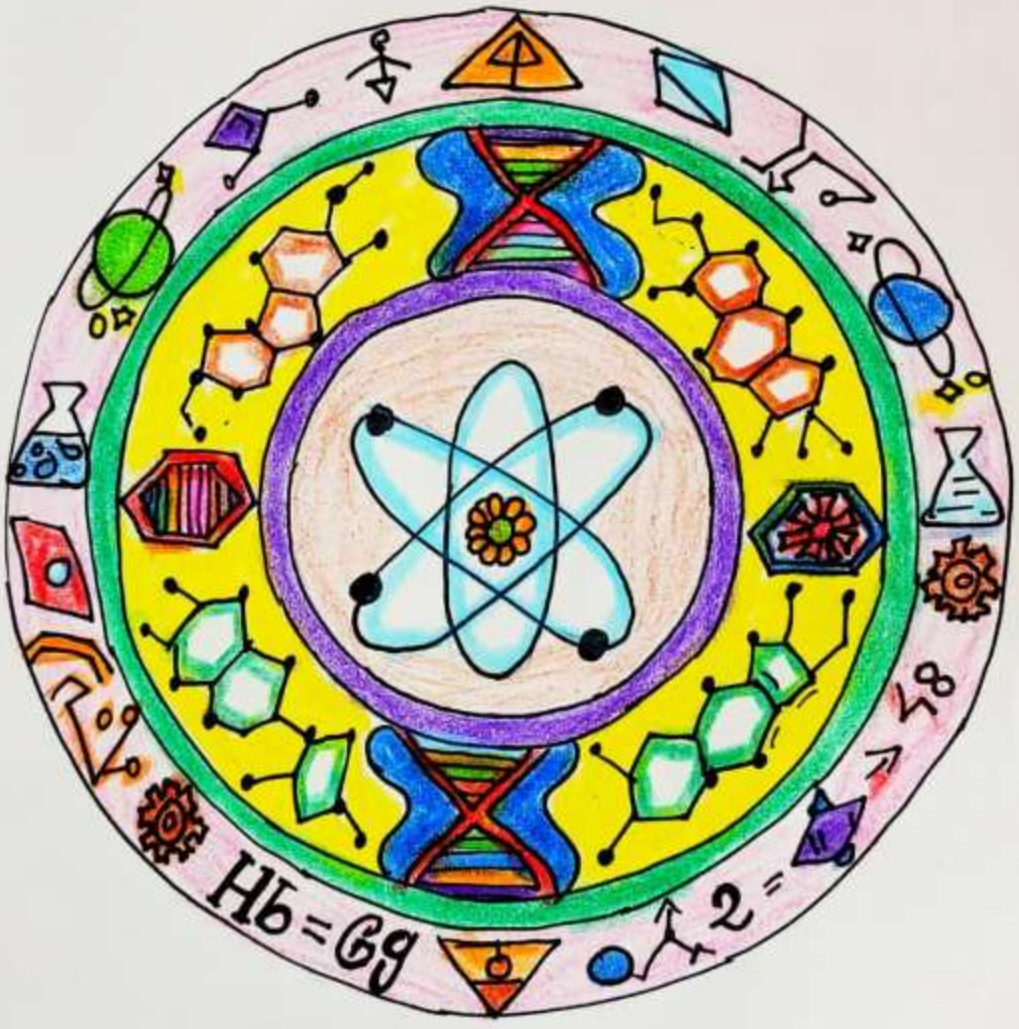
Name – Tenzhaw Tayung
class – 11 A
Roll no – 37.

TOPIC: SCIENTIFIC RANGOLI



Name :- Aryan Saikia
Class :- XI Sec:-A
Roll No :- 11
SCHOOL :- Kendriya Vidyalaya Golaghat

Topic – Scientific Rangoli









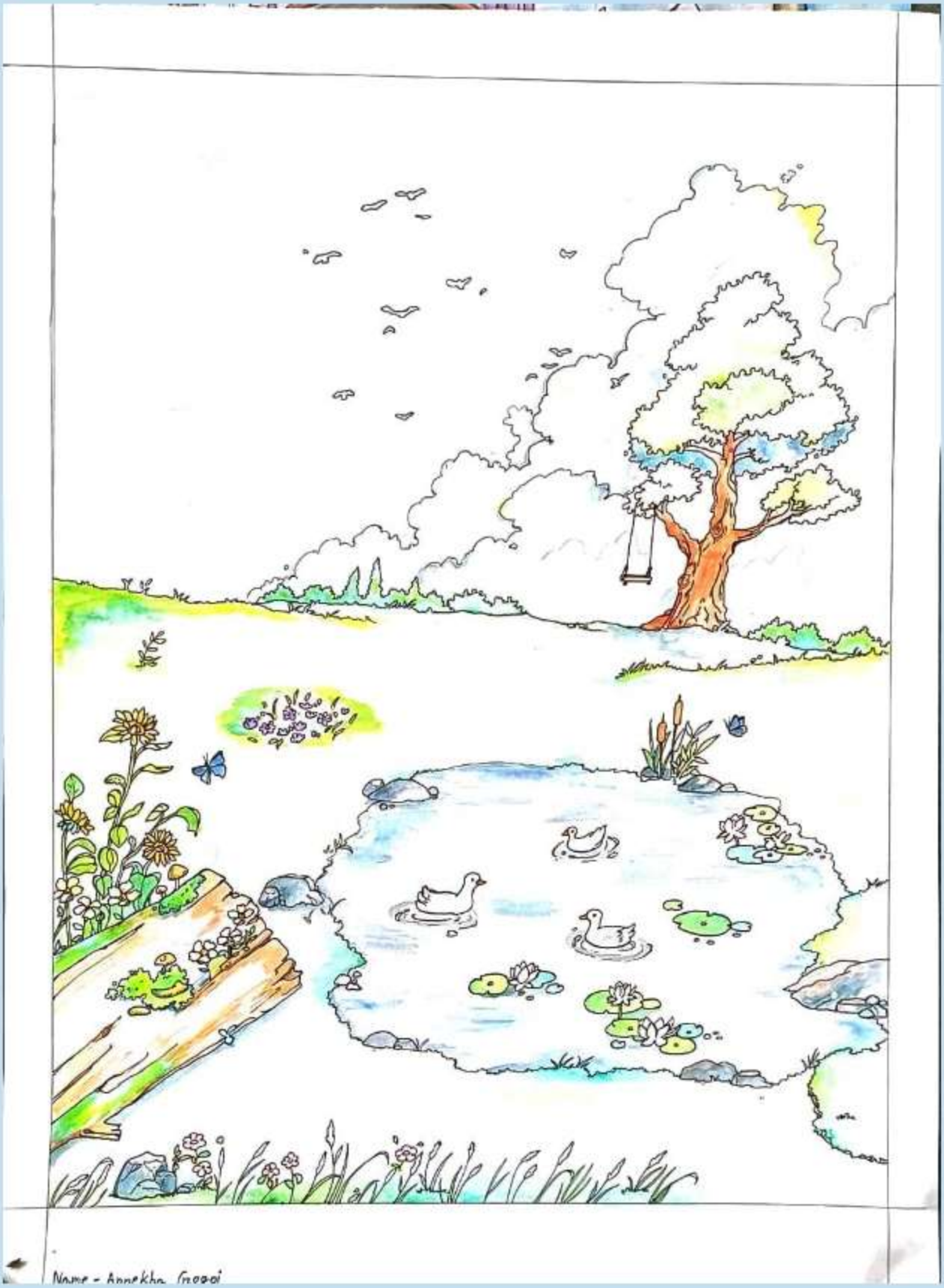











Name - Annekha Groodi









फ़ोटो गैलरी

Photo Gallery

तत् त्व पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

The School









Inspection









Library Activities









FLN







Eco Club Activities










Educational Tour











PTM's







Vidyanjali









Swachchta Pakhwada









Sports Activities









Hindi Pakhwada













NCC Activities





PM SHRI ACTIVITIES



















तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

Every page turned is a lesson learned ; every screen closed is a new journey begun. Go out there, chase your dreams, and make PM SHRI KV Golaghat proud...



नमस्कार